संचेतना

विवेक युक्त आस्था, आस्था सहित विवेक

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद

HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE COUNCIL

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल

मासिक ई-न्यूजलेटर अंक–I, दिसम्बर,2021

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद के संचालक मण्डल के सदस्य

एक परिचय

कला संकाय के समस्त प्राध्यापकों द्वारा दिनाँक 08 अक्टूबर 2021 को मानविकी एंव समाज विज्ञान परिषद का गठन किया गया। सदस्यों के चयन के पश्चात इस पर निर्णय लिया गया कि महाविद्यालय के सात 07 (प्राध्यापक) एवं 02 अध्ययनरत छात्रों को कार्यकारिणी समिति में सम्मिलित किया जाएगा। नैक के सफल सम्पादन के लिए भी इस पर विचार विमर्श किया गया।

दिनाँक 09 अक्टूबर 2021

08 अक्टूबर को कार्यकारिणी समिति की बैठक में 07 सदस्यों को सर्वसम्मति से मनोनित किया गया एवं इसी बैठक में डॉ0 मणिकान्त शाह द्वारा पहला व्याख्यान दिनॉक 17 नबम्बर 20 को दिए जाने के लिए सभी सदस्यों की सहमति बनी।

दिनाँक 26 अक्टूबर 2021

इस दिन परिषद के कानून एवं नियमों पर चर्चा के पश्चात उन्हें लागू करने पर सभी सदस्यों की सहमति बनी। एक दिवसीय कार्यशाला को भी आयोजित करने पर विचार किया गया। जो कि आगामी वर्ष में प्रस्तावित है।

दिनाँक 27 अक्टूबर 2021

परिषद के उदेश्यों पर चर्चा के पश्चात् यह निर्णय लिया गया कि परिषद द्वारा आयोजित व्याख्यान, संगोष्ठी एवं कार्यशाला को ऑफलाईन/ऑनलाईन के माध्यम से करवाने पर सहमति बनी।

दिनाँक 28 अक्टूबर 2021

परिषद के सफलतापूर्वाक संचालन हेतु सदस्यों को नामित किया गया जिसमें अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष ई–न्यूज लेटर के सम्पादक आदि अन्य सदस्यों को कार्यभार दिया गया।

दिनाँक 12 नवम्बर 2021

परिषद के प्रथम व्याख्यान के लिए डॉ0 मणिकान्त शाह द्वारा थॉमस कूह्न की पुस्तक **''वैज्ञानिक क्रान्ति की संरचना के सन्दर्भ की पष्ठभूमि''** शीर्षक पर दिनाँक 17 नवम्बर 21 को व्याख्यान देने की औपचारिक घोषणा की गयी ।

दिनाँक 17 नवम्बर 2021

परिषद की सभी गतिविधियों को पूर्ण करने के पश्चात् इसका उद्घोषण हुआ। समय 12:15 से डॉ0 मणिकान्त शाह ने अपना व्याख्यान प्रारम्भ किया जो 02:15 पर समाप्त हुआ। इस व्याख्यान में 76 शिक्षको एवं छात्र–छात्राओं की उपस्थिति रही। डॉ शाह ने अपने व्याख्यान में लेखक व पुस्तक के स्थान पर उनकी पुस्तक की पृष्ठभूमि पर ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने बताया कि विज्ञान अनुशासन नहीं है बल्कि यह अध्ययन की एक विधि है, जिसके माध्यम से हम किसी भी विषय वस्तु का अध्ययन कर सकते हैं। इसी के

साथ उन्होंने कहा कि शोध में भी शोधकर्ता इसी पद्धति का अनुसरण करते हैं। कुह्न के अनुसार विज्ञान का विकास ''पेराडाइम शिफ्ट'' के कारण होता है, क्योंकि वैज्ञानिक परिवर्तन विशुद्ध रूप से एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया नहीं है अपितु एक सामाजिक प्रक्रिया है। डॉ शाह ने छात्र–छात्राओं को वैज्ञानिक क्रान्ति के लिए तैयार होने के लिए कहते हुए अपने व्याख्यान का समापन किया।

सम्पादकीय

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद का गठन 08 नवम्बर 2021 को किया गया। मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद के तत्वाधान में होने वाले व्याख्यान को साहित्यिक विद्वत समाज एवं छात्र/छात्राओं के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। अध्ययन के दौरान ही छात्र/छात्राओं को बेहतर से बेहतरीन होने का अवसर प्राप्त होता है। मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद के माध्यम से छात्र/छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए सकारात्मक प्रयास किया जा रहा है। विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुसार अपनी क्षमताओं का आंकलन भी कर सकेंगे। परिषद के माध्यम से प्राध्यापक एवं छात्र/छत्राओं के बीच विचारों का आदान प्रदान भी होता रहेगा।

डॉ0 इन्दिरा जुगरान
एसो0 प्रोफेसर
संस्कृत विभाग

NFHS-5 2019-20: KEY HIGHLIGHTS

The National Family Health Survey (NFHS) is a large scale, multi-round survey conducted in a representative sample of households throughout India. The first round of NFHS was conducted in 1992-93 and the latest round is the fifth round conducted for 2019—21. The objective of the survey is to provide requisite data on health and family welfare as needed by the ministry of Health and family welfare which conducts the survey. The Ministry has appointed International Institute of Population Sciences as the nodal agency responsible for providing coordination and technical guidance for the survey.

Recently, key indicators for the country as well as 22 states and union territories from Phase 1 of NFHS-5, 2019-20 were released. The key highlights of the survey at the national level and their implications include the following:

I . The total fertility rate (TFR) has been falling ones times and has now reached below at 21 at 2.0 just below the replacement rate of 2.1. This is true across all states of India which means that population has stabilized. This decline in TFR has further positive implications for women health as well. There one many factors responsible for this decline in TFR including rising female literacy, delayed marriage for both male and female, etc.

II. During 2019-21, it has been for the first time that more adult women were recorded than adult man which was revealed by an adult sex ratio of 1020 adult women per 1000 men. However the child sex ratio is still skewed at 952 child sex ratio is still skewed at 952 child sex ratio is still skewed at 952 girls per 1000 boys (0- 6) years.

III. The incidence of anaemia in under 5 children women as well as men has worsened in all states of India. This is a matter of grave concern as for as the health of the nation is concerned and the issue must be addressed by appropriate policy intervention.

IV. The three indicators of malnutrition, stunting, wasting and underweight show an overall improvement.

As far the key indicators in NFHS-5 for the state of Uttarakhand and its districts are concerned the total fertility rate has declined from 2.1 (NFHS, 2015-16) to 1.9 (NFHS-5 2020-21). The sex ratio at birth for children born in the last five years (females per 1000 males) has also improved from 888 (NFHS-4, 2015-16) to 984 (NFHS-5, 2020-21). The Infant Mortality Rate has also improved from 39.7 to 39.1. There has been significant increase in the percentage of C-section deliveries for Uttarakhand from 9.4% to 13.7% and similar trends are visible at the national level as well. WHO advocates the ideal percentage of

C- section births to be around 10-15% but in private hospitals of India every second pregnant woman is delivering through C-section operations. There is a need to inquire into this abnormally high percentage of C-section deliveries in private health care facilities which surpasses the percentage advocated by WHO.

The data above shows that NFHS-5, 2019-21 reveals positive trends related to women health, child nutrition ,sex ratios, population growth etc., about which the country can take a sigh of relief. But at the same time, concerns like rising anaemia, increasing C-section deliveries and TFR falling below replacement level might be early signs of major issues that can emerge as cause of concern in the future and hence appropriate measures taken timely can prove to be fruitful.

Dr. Pooja Bhandari
Assistant Professior
Deptt .of Economics

वैश्वीकरण : हिन्दी भाषा एवं साहित्य का दिशा निर्धारण

विज्ञान ने आज दुनिया के सभी देशों को एक बाजार बना दिया हैं जिससे किसी भी क्षेत्र या स्थान अथवा देश की घटना समस्त देशों को प्रभाावित करती है। अन्तर्राष्ट्रीय निकटता के परिणाम स्वरूप विदेशी साहित्य ने भी हमारे साहित्य को प्रभावित किया हैं इसलिए साहित्य में अन्तर्राष्ट्रीय रूचि का विकास इसी भूमण्डलीकरण का परिणाम है। भारत देश की राजभाषा हिन्दी आज विश्व साहित्य और विश्व बाजार का मुकाबला करने के लिए सक्षम और तत्पर हो उठी है। पाश्चात्य कवियों व उनके साहित्य तथा काव्यान्दोलनों का हिन्दी साहित्य व कवियों पर प्रभाव इसी तत्परता एवं हिन्दी की सक्षमता का प्रमाण है। डॉ वी0 एम0 नेथन अपने लेख 'हिन्दी की वैश्विक चेतना' में हिन्दी साहित्य में पड़े प्रभाव की स्थिति को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं–''औद्योगिककररण, शहरीकरण, कृषि, संस्कृति का विघटन, नारी जागरण, स्थानान्तरण आदि से सामाजिक पक्ष हैं, जिनका प्रभाव अ00न्तर्राष्ट्रीय साहित्य पर पड़ा। औद्योगिक सभ्यता की यांत्रिकता, महानगरों का अजनबीपन, सांस्कृतिक विघटन की पीड़ा यह सब ऐसे घटक हैं, जिससे विश्व–साहित्य अनुप्रमाणित हुआ है। इनमें भावनाओं की अपेक्षा विचारों की अभिव्यक्ति अधिक हुई है। अस्तित्ववाद, लघुमानवतावाद, आधुनिकतावाद, उत्तर आधुनिकतावाद, अतियथार्थवाद, जादुई यथार्थवाद, उपभोक्तावाद आदि अनेक विस्तृत वैचारिक परिसर, जिनका प्रभाव विश्व साहित्य के साथ हिन्दी साहित्य पर पड़ा।''

डॉ अंकिता बोरा
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग

बैंक

- बैक क्या है ?

  आज के समय हम सभी लोग बैकों से भली–भॉति परिचित है। बैंक एक प्रकार की संस्था होती है जो अपने ग्राहको या आम शब्दों में हम कहे लोगों को समय आने पर ऋण (उधार) देता है व लोगों द्वारा अपनी आय (कमाई) से बैंक मे जमा की गई अपनी बचत (Saving) को सुरक्षित रखता है।

- आखिर बैंक क्या काम करती है ?

  बैंक जनता से लेन–देन करती है। जनता बिना डर के बैकों मे पैसा जमा कर सकती है। (ब्याज एक प्रकार का पैसों पर किराया होता है। जो बैंक अपने ग्राहकों को जमा किए गए पैसों पर एक निर्धारित प्रति"ात के हिसाब से देता है।) बैंक लेन–देन के अलाबा जनता को कई प्रकार के ऋण (Loan) भी देता है। जैसे की बिजनेस लोन, होम लोन, कार लोन, एजुकेशन लोन।

- बैंक क्यो जरूरी है?

  वर्तमान समय में हम पैसों को घर में सुरक्षित नही मानते। क्योंकि प्रतिदिन हम खबरों, मैग्जीन एवं न्यूजपेपर में चोरी–डकैती के मामले सुनते और पढते रहते है। ऐसी परिस्थिति में बैंक अपने ग्राहकों के लिए वि"वसनीय साबित हुआ है। बैंक न केवल अपने ग्राहकों या जनता के लिए आव"यक है बल्कि यह किसी भी दे"ा की अर्थव्यवस्था में विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

  (1) बैंक लोगों द्वारा जमा किए गए पैसों पर ब्याज देता है जिसके कारण ग्राहकों की आय में भी वृद्धि होती है , जो कि अर्थव्यवस्था की वृद्धि में भी सहायक है। यही नहीं यह दे"ा के नागरिको को रोजगार देता है, जिससे दे"ा में बेरोजगारी को कम किया जा सकता है।

  (2) बैंक अन्य दे"ाों दे"ाों के साथ लेन–देन भी करता है जिससे दे"ा की अर्थव्यवस्था पर सीधा असर देखने को मिलता है। वर्तमान समय (2021) में भारतीय स्टेंट बैंक भारत का सबसे बड़ा बैंक है एवं यह एक भरोसेमंद बैंक है।

Reserve bank of India (RBI)

भारत का केन्द्रीय बैंक RBI कहलाता है अर्थात् यह भारत के समस्त बैंकों को चलाता है। RBI भारत की अर्थव्यवस्था को नियत्रंण में रखता है। यह समस्त बैंको के लिए नोट छापने का काम करता है। इसे बैंको का बैंक भी कहा जाता है। यदि हम शुरूआती बैंको और अब के बैंको की तुलना करे तो हमे इनमें कई सारे बदलाव देखने को मिलते है। इसका जीता जागता उदाहरण हम अपने क्षेत्र टिहरी गढवाल,उत्तराखण्ड से ले सकते है जहॉ वर्तमान समय (2021) में आठ से अधिक बैंक

शामिल है। जहाँ ग्राहको के लिए सभी प्रकार की सुविधाएँ पूरी सुरक्षा व नई टैक्नोलॉजी के साथ उपलब्ध है।

उपरोक्त लेख से स्पष्ट है कि बैंक हमारे लिए और हमारे दे"ा के विकास के लिए कितना जरूरी है हम सभी को बैंक की सुविधाओं का लाभ उठाना चाहिए ताकि दे"ा का विकास भी हो। बिना बैंक के दे"ा की अर्थव्यवस्था में विकास के बारे में सोचना संभव नही है।

मनविकी एवं समाज विज्ञान परिषद का गठन 03 नबम्बर 2021 को किया गया। मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद के तत्वाधान में होने वाले व्यारमान को साहित्यिक विद्वन समाज एंव छात्र/छात्राओं के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। अध्यपन के दौरान ही छात्र/छात्राओं को बेहतर से बेहतरीन होने का अवसर होता है। मानविकी एंव समाज विज्ञान परिषद के माध्यम से छात्र/छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए सकारात्मक प्रयास किया जा रहा है। विधार्यो अपनी रूचि के अनुसार अपनी क्षमताओं का आंकलन भी कर सकेगे।

बैक के सफल सम्पादन एव अपने विचार रखने के उद्दे"य से इस परिषद का गठन हूआ। परिषद के माध्यम से प्राध्यापक एंव छात्र/छात्राओं के बीच विचारों का आदान प्रदान भी होता है।

आकृति
बी0ए0 प्रथम वर्ष

Women in Leadership and Management

A leader has an ability to get things done by others. A capability to lead makes one a leader when it comes to leadership, it's a quality to influence others through direction motivation and supervision. Women is a leader in her every walks of life. Her different roles make her a leader. She is a leader as responsible homemakers, a devoted wife, a committed mother, an excellent jobholder as well as professional.

While performing her different roles, she has to deal with lots of challenges including largely under-represented in the workplace, besides full and equal participation in all aspects of society. Women and girls continued to be undervalued, they work more and earn less, have fewer choices and experiences multiple forms of violence at home and in public areas. It's a challenge to women to first handle these problems and then to get any higher positions and even if she reaches to a position these obstacles remains with her besides lots of challenge and obstacles women are working as a leader. The most powerful nation in the world has elected Kamala Harries as vice president from India in 2020. World trade organization has chosen an African lady Ngozi-Okonjo- Iweala as its first women Director General. New Zealand is also under its lady leadership. India's richest self- made and first female brew master is Dr. Kiran Mazumdar-Shaw. The 2020 the Nobel prize winner for Literature, physics and chemistry were granted on women.

Women are also in management at higher positions. The share of women in higher ranking roles in management globally increasing rapidly In 2019, 29% of senior managing roles were obtained by women. 43% of HR directors were women compared 16% of chief information officer and 17% of sales directors. In 2020 40% of human resources directors are women compared to 17% of chief marketing officers and 16% of chief information officers.

It is noted by MC Kinsey Global Institute (MGI) that Increasing the participation of women in corporate, India shall boost the Indian Economy by potentially increasing GDP to $28 trillion by 2025, which is 26% more than predicted value. A number of studies have noted that women have a transformation style of leadership. They have ability to establish themselves as role models by gaining follower's trust and confidence along with making necessary changes to the current business models. So when women become leaders they provide a different set of skills imaginative ideas and structural and cultural differences that drive effective solutions.

Yes, of course no doubt that women are leaders and have leadership qualities inbuilt, but the reasons why women may not seek or apply to be elected as a leader is self confidence. The first thing which can encourage them is self confidence. For this organization should think to examine their training at both the professional and executive level and also to give them clear workplace.

It seems even if there is multiple challenges and social problems in women is life women are doing their best in their workplace. They are in every sector and places. They are in every sector and institutions. They are leading and managing their personal and professional life in all possible ways. But we should always remember that it all begins with small steps of empowerment by each and every individual towards women. Celebrate the girl child when she is born, give her equal opportunities as a boy when it comes to study & jobs teach her that there is nothing stopping her for achieving her dreams. Let's give her a clear sky!

Shivanshi Uniyal,
BA II year

संचेतना

विवेक युक्त आस्था, आस्था सहित विवेक

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद

HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE COUNCIL

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल

मासिक ई-न्यूजलेटर अंक-II, जनवरी,2022

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद का द्वितीय मासिक व्याख्यान

डॉ पूजा भंडारी का व्याख्यान 'कार्य स्थल एवं घर पर महिलाओं द्वारा निभाई जाने वाली दोहरी भूमिका' एवं उन दो भूमिकाओं के बीच के अन्तःसंबंधों पर केन्द्रित रहा। डॉ पूजा भंडारी ने विश्व आर्थिक मंच द्वारा जारी की गई रिपोर्ट में वैश्विक लिंग असमानता बढ़ने के संदर्भ में भारत की महिलाओं की दूदर्शा पर चर्चा की।

उन्होंने रिपोर्ट के दो चिन्ताजनक आंकडों को सामने रखते हुऐ बताया कि कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी में गिरावट तथा स्वास्थ उपसूचकांक में कमी आई है। व्याखयान के अन्त में उन्होंनें कहा कि व्यापक लिंग अन्तर को कम करने के लिए महिला केन्द्रित मुद्दों से संबन्धित जागरूकता उत्पन्न करने के लिए समाज की भागीदारी होनी चाहिए। साथ ही वह सरकार द्वारा सक्रिय जातिगत हस्तक्षेप की मांग करती है।

Editorial

It is an immense pleasure to tell that the second E- newsletter is going to be published. On this occasion I am grateful to the Academic Head, Dr. Indira Jugran, Associate Professor in Sanskrit.

It is the platform for all the members of the Council, students of the college to show their desire towards studies, lecture etc.

I am thankful to all the members who gave me support for this e-newsletter. I also gave my sincere thanks to the Principal, Govt. P.G College, New Tehri, Tehri Garhwal.

Last but not the least, I extend my thanks to the members of the editorial board who gave me support and help for published this e-newsletter. I thank Dr. S.S Kohli, Assistant Professor in Sociology and Dr. Meera Kumari, Assistant Professor in Hindi Department for devoting their time for publishing this e-newsletter.

Dr. Nishant Bhatt
Assistant Professor
Department of English

Adventure Tourism and the Prospectus of Employment in Uttarakhand

Uttarakhand commonly regarded as 'Devbhoomi' or the 'land of gods' is considered as as a paradise for adventure sports. Adventure being an exciting and

unusual experience for tourists is a major source of attraction in the state. With the abundance of natural tourism resources, Uttarakhand is a home to the magnificent snow- clad Himalayas, splashing rivers, and the vast 'bugyals' extending beyond horizons.Uttarakhand offers outstanding skiing facilities in the Auli Ski Resort, providing excellent opportunities for cross-country and downhill skiing events. While water river rafting is another popular and thrilling adventure sport. The unique topography of Uttarakhnd with splendid Himalayas in the north and plains of 'Tarai' in the south promises an unforgettable paragliding experience. Trekking in Pindari Glacier, Deoria Tal and Chandrashila has continued to lure mountaineers and trekkers for a long time. Besides all these camping, rock climbing, bird watching, lake activities, jungle safari and mountain biking are other thrilling and invigorating experience of a lifetime, and is available in plenty in Uttarakhand. In recent years, adventure tourism is emerging as an energetic, execting, vibrant and rapidly growing sector of Uttarakhand tourism industry. Apart from being recreational and leisure activity, adventure tourism activities like river rafting, paragliding, skiing, rayaking, canoeing, boating, camping and trekking are highly labour intensive with a range of career options available for the local people of Uttarakhand. Job opportunites in adventure tourism can contribute towards the growth and development of the state, both from the prospects of revenue and employment generation and as as instrument of promotion of cultural and regional heritage.

Dr. Preetam Singh
Assistant Professor
Department of English

MULTIDIMENSIONAL POVERTY INDEX AND UTTRAKHAND.

As the world moved forward to the sustainable development goals in 2015, the first of which is “to end poverty in all its form everywhere” this in its essence is a very multidimensional statement. Thus the time had arrived in India to employ a very non-monetary metric to index its poverty measurements.

Thus in early 2020 the Cabinet Secretariat GOI, under the mandate to improve India’s ranking in the Global Indices for Reforms and Growth(GIRG) identified NITI Aayog as the Nodal Agency for Multidimensional Poverty Index(MPI).

Tasked with the responsibility of ensuring “no one is left behind“, the MPI is a broad index covering over 700 districts capturing indicators across twelve parameters which capture simultaneous deprivation and indicator wise contribution to poverty.

The MPI is measured using Alkire-Foster methodology, which is a framework where people are identified as poor and non-poor on the basis of a dual cutoff counting method. In the Indian backdrop this done by calculating the Head Count Ratio (H) which gives “how many poor” i.e. multidimensional poor are there. Then the qualitative dimension of “how poor are the poor” is calculated by the average share of weighted indicators of multidimensional poor people. This is known as the intensity of the poverty(A).Thus MPI is the product of aforementioned indices i.e. MPI=A*H.

The twelve indicators used to calculate the MPI are nutrition, child and adolescent mortality, ante natal care, years of schooling, school attendance, cooking fuel, sanitation, drinking water, electricity, housing, assets and bank account. These indicators cover the equally weighted dimensions of health, education and standard of

living.

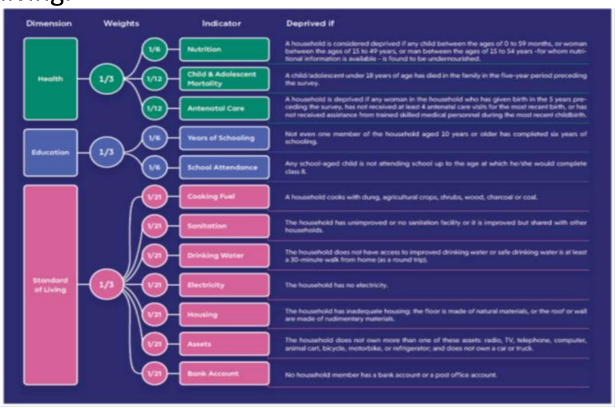

The first MPI (2021) is based on the dataset provided in the round of NFHS-4(2015-16). As regard to Uttrakhand it has an MPI of 0.079, it is positioned at 15th among 29 states in raw head count ratio (17.72%) which means that around 18%of its total population is multidimensionally poor. The indicator suggests that it is the deprivation of cooking fuel, nutrition, maternal health, sanitation and housing that feeds into poverty of people of Uttrakhand. As regards to the head count ratio in terms of districts of Uttrakhand , Almora district has the most percentage of the population that is multidmensionally poor (25.65%) and Dehradun district has the least percentage of the population that is multidimensionally poor(6.88%).The rural urban divide in terms of poverty is quite evident in the index as the head count ratio for the multidimensionally poor in the rural region of Uttrakhand is 21.94%as compared to the 9.89% in the urban region.

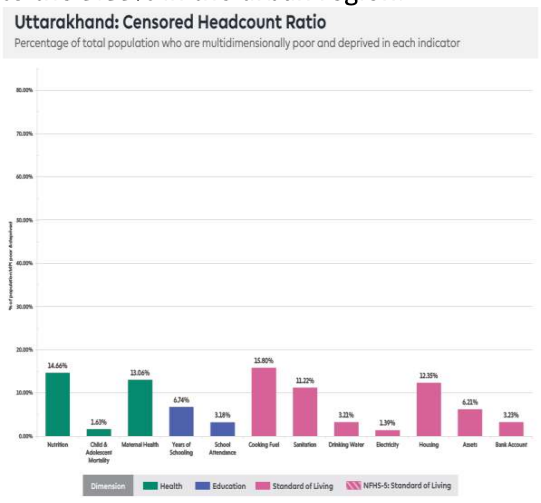

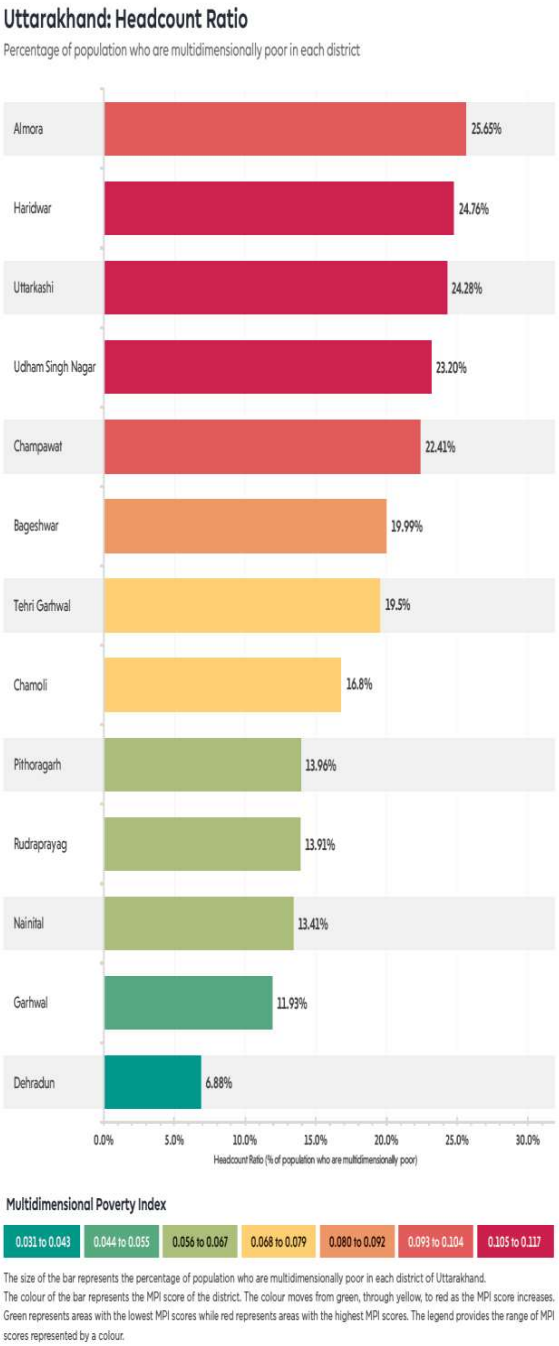

A reform action plan for cooking fuel, nutrition, maternal health and sanitation is certainly needed for Uttrakhand rural poor. As schemes and programmes regarding these indicators don't have the desired effect that could be captured in the MPI score. Though the NITI Aayog certainly does have template for reform action plan but it is generalized plan made in consultation with central government ministries. Thus now the state government along with the administration

should take into account the realities and developmental challenges, set its priorities by suitably modifying development programmes and schemes according to the local needs so that there is a visible reduction in multidimensional poverty and deprivations.

VAIBHAV SINGH RAWAT
ASSISTANT PROFESSOR
ECONOMICS.

आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र में महिलाएँ

स्त्री शक्ति राष्ट्र शक्ति का अभिन्न अंग है, जिसे सशक्त और शामिल किए बिना कोई राष्ट्र शक्तिशाली नहीं हो सकता। भारत के संबंध में कई बार वर्ल्ड बैंक ग्रुप आादि ने कहा है कि अगर यहाँ पर महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में वृद्धि की जाए तो भारत की विकास दर में तीव्र वृद्धि हो सकती है। गौरतलब है कि 1994 से 2012 के मध्य कई लाख भारतीय गरीबी रखा से बाहर निकल चुके हैं। इन आँकडों में और अधिक बढोतरी होती अगर कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी अधिक होती। महिलाएँ 2012 में सिर्फ 27% भारतीय महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत थी।

चिंता की बात यह है कि भारत के तीव्र शहरीकरण ने कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी में कोई वृद्धि नहीं की है। देश में कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी में 37% से नीचे गिरकर 2019 में 18% रह गई एवं जेंडर गैप के मामले में 23% पर आ गई। रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया द्वारा प्रदान की गई सूचना के अनुसार महिलाओं की श्रम भागीदारी दर 2001 में 25.63% थी यह 1991 में 22.27% थी और 1981 में 1967 की तुलना में अधिक थी। 2001 में ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाश्रम भागीदारी दर 30.79% थी। शहरी क्षेत्र में लगभग 80% महिला श्रमिक संगठित क्षंत्रों में काम करती हैं।

2004-05 कें दौरान देश के कुल श्रम-शक्ति का अनुमान 455.7 मिलियन लगाया गया है। जो विभिन्न राज्यों के लिए एम्प्लॉयमेंट/अनएम्प्लॉयमेंट और जनसंख्या फैलाव पर एनएसएस राउन्ड सर्वे पर आधारित है। महिला श्रमिकों की संख्या 146.89 मिलियन थी या कुल श्रमिकों का केवल 33.2 प्रतिशत थी। इन महिला श्रमिकों में लगभग 106.89 मिलियन या 72.8 प्रतिशत कृषि कार्य करती थी। ब्लड बैंक ने अपनी इंडिया डिवैलपमेंट रिर्पाट में कहा है कि वर्कफोर्स में महिलाओं की भागीदारी के मामले में भारत काफी पीछे है। इस मामले में देशों की सूची में वह 120वें स्थान पर है। श्रमशक्ति में औरतों की भागीदारी 2005 के बाद से लगातार कम हुई जबकि देश में 42 फिसदी स्त्रियाँ ग्रैजुएट हैं। इंडस्ट्री और सर्विस सेक्टर में उनकी उपस्थिति महज 20 फीसदी है। निश्चित रूप से यह हमारे लिए सबक है। भारत की विकास प्रक्रिया सही मायने में अपने मुकाम पर पहुंचेगी जब महिलाएँ इसका अनिवार्य हिस्सा बनेंगी।

नाम :- शीतल
कक्षा :- बी.ए. प्रथम वर्ष

जनरेशन गैप

'जनरेशन गैप' जिसे पीढ़ी अंतराल भी कहा जाता है। हर उम्र के व्यक्ति के लिए एक सामान्य विषय बन चुका है। इसे हम इस संदर्भ में समझते हैं कि माता-पिता और संतान की उम्र का फासला ही जनरेशन गैप कहलाता है। परंतु यह पीढ़ी अंतराल केवल उम्र के आयाम तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह विचारों में मतभेद, आदशों में अन्तःर्विरोध, आदि कई विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से लिप्त हैं।

अक्सर यह देखने को मिलता है कि विभिन्न आयामों से लिप्त पीढ़ी अंतराल के फलस्वरूप संतान अपने माता-पिता से कई पहलुओं पर चर्चा करने में असहज रहती है। जैसे-जैसे शिशु बाल्यावथा से यौवनावस्था की ओर प्रवेश करता है, उसका जीवन की सच्चाई से साक्षात्कार होता है। तब बहुत से ऐसे नवीन एवं संवेदनशील मुद्दे प्रकट होते हैं जिन पर एक संतान केवल अपने माता-पिता पर ही भरोसा कर सकती हैं, परंतु जनरेशन गैप के कारण ऐसा करना दुष्कर प्रतीत होता है। ऐसे में सर्वप्रथम यह प्रश्न उभरता है कि क्या यह संतान एवं अभिभावक के मध्य स्पष्ट रूप से उपजे? या यह संभव हो कि अभिभावक एवं संतान दोनों ही ऐसे प्रयास करें कि दोनों पीढ़ियों के बीच के अंतर को इस प्रकार सुलझाया जाए कि माता-पिता और संतान अपनी उम्र के किसी भी पड़ाव पर निःसंकोच एक-दूसरे से विचार-विमर्श कर सकें।

आवश्यक तो नहीं कि हमेशा माता-पिता को पुराने ख्यालात वाला एवं बच्चों को गैर-जिम्मेदार बताकर उनसे दूरी बना ली जाए,बल्कि हल तो तब निकल आता है जब बड़े भी आधुनिक विचारों को महत्व दें और बच्चे भी प्राचीन आद को समझें अगर बड़े और बच्चे दोनों ही सकारात्मक दिशा में प्रयास करें तो 'पीढ़ी अंतराल' एक शब्द मात्र रह जाएगा। और फलस्वरूप न तो कभी माता-पिता खुद को बेसहारा एवं अकेला पाऐंगें और बच्चे भी उत्कंठा से ग्रसित होने पर गलत राह पर नहीं चल पड़ेंगे।

नामः- मणिका राणा
कक्षाः- बी.ए. द्वितीय वर्ष

संचेतना

विवेक युक्त आस्था, आस्था सहित विवेक

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद

HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE COUNCIL

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल

मासिक ई-न्यूजलेटर अंक-III, फरवरी,2022

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद का तृतीय मासिक व्याख्यान

डॉ संजीव सिंह नेगी असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी ने उर्दू जुबान और गालिब विषय पर अपनाा व्याख्यान दिया। डॉ संजीव सिंह नेगी ने उर्दू भाषा की महत्ता पर चर्चा की। उन्होंनें बताया कि उर्दू भारतवर्ष की और हम सब की भाषा है। यह भाषा दुनियाँ को देखने का हमारा नजरिया बदलती है। इसके साथ ही उन्होंनें हमें उर्दू के कई शब्दों से अवगत कराया ।

डॉ संजीव सिंह नेगी नें गजल और गालिब के बीच संबंध बताने के साथ–साथ हमें बताया कि गजलें विभिन्न भाषाओं में लिखी गई हैं। साथ ही उन्होंनें हमें गालिब के शेरों से भी अवगत कराया ।

Editorial

It is an immense pleasure to inform you that the third printed E- Newsletter ''Sanchetna''is going to be published from the editor's desk. In this occasion I am grateful to my Academic Head, Dr. Indira Jugran, Associate Professor in Sanskrit.

It is the platform for all the members of the Council, students of the college to show their desire towards studies, lecture etc.

I am thankful to all the members who gave me support for this E-Newsletter. I also give my sincere thanks to the Principal, Govt. P.G College, New Tehri, Tehri Garhwal.

Dr. Nishant Bhatt
Assistant Professor
Department of English

संस्कृत की प्रासंगिकता

संस्कृत क्यों जरूरी है – संस्कृत के विषय में कई तरह के प्रश्न पूछे जाते हैं ।

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य उससे पूर्णतया अनुप्रांणित है । संस्कृत भाषा एवं वैज्ञानिकता को देश विदेश के विद्वनों नें स्वीकार किया है। वेद,

उपनिषद, रामायण, महाभारत और गीता का आज भी देशव्यापी प्रचार है । हमारे देवालयों एवं तीर्थ स्थानों में उसका प्रभाव आज भी अक्षण्ण है । हमारे उपनपन विवाह आदि समस्त संस्कार तथा अन्य धार्मिक कृत्य संस्कृत में ही सम्पन्न होते हैं। किसी भी शव्द के सही व्युत्पत्ति परक ज्ञान के लिए संस्कृत कर ज्ञान आवश्यक है ।

सम्पूर्ण विश्व का सर्वाधिक पुराना साहित्य वेद है। विश्व सृष्टि का अनुसंधान भी सर्वप्रथम विश्व के समक्ष विश्व के प्राचीन लिखित ग्रन्थ ऋगवेद में उपलब्ध होता है–

''नासदासीन्नो सदासीत् तदानीमासीद् रजः नो व्योपमरो यत्।
किमावरीवः कुहकस्प शर्मन अम्भः किमासीद् गहनं गम्भी रम्।''

उस समय सृष्टि उत्पति से पहले असत् अभावात्मक तत्व नहीं था और सत्तात्मक तत्व भी नहीं था। रजः अर्थात पृथ्वी आदि का कोई लोक भी नहीं था। अन्तरिक्ष नहीं था और अन्नरिक्ष से परे कुछ भी नहीं था।

''आकाशाद् वायुर्वायोरग्निेरापडदभ्यः पृथ्वी।''

आकाश से स्पन्दन् होकर वायु उत्पन्न हुई, वायुअग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी अविर्भूत हुई आधुनिक वैज्ञानिको नें जब तक यह पता लगाया कि जल हाइड्रोजन तथा आक्सीजन का पौगिक रूप है तथा हाईड्रोजन जलनशील गैस है और आक्सीजन के बिना भी अग्नि प्रज्जवलित नहीं हो सकती तब तक संस्कृत वाड्मप में अग्नि से मानी गयी जल की उत्पत्ति को अस्मभव मानते थे।

आधुनिक वैज्ञानिकों ने जो यह प्रतिपादित किया कि पदार्थ मात्र अविनाशी है, उसका केवल रूपान्तरण किया जा सकता है, सर्वथा विनाश असम्भव है। वह तथा संस्कृत में पाँच सहस्र वर्ष पूर्व कृष्ण शब्दों में प्रतिपादित कर दिया गया था–

''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।''

जो है ही नहीं, उसकी विद्यमानता हो ही नहीं सकती और जो विद्यमान है, उसका कभी विनाश नहीं हो सकता।

केवल भारतीयों ने ही नहीं अपितु अनेक विदेशी विद्वानों नें तो अपना पूरा का पूरा जीवन ही संस्कृत को समर्पित कर दिया। जैसे– इब्राहिम रोजर ने संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर भर्तृहरि के सुभाषित श्लोकों का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया। मैक्समूलर ने सायण भाष्य सहित ऋगवेद को प्रकाशित कराया तथा संस्कृत, साहित्य का इतिहास लिखा।
चार्ल्स विलिकन्स ने भगवद्गीता, हितोपदेश शकुन्तकलोपाख्यान का अंग्रजी अनुवाद प्रकाशित किया। यह पहला अंग्रेज था जिसने भारतीय शिलालेखों का अध्ययन कर उनमें से कुछ का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया। सर विलियमजोन्स ने 'अभिज्ञान शकुन्तलम् का अंग्रेजी अनुवाद किया। मनुस्मृति का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित कराया।

प्राचीन भारत में कला एवं विज्ञान की समुन्नत दशा के प्रत्यक्ष प्रमाण स्वरूप देश भर में विद्यमान मूर्ति, चित्र,स्तम्भ,मन्दिर, स्तूप, दुर्ग, प्रासाद आदि आश्चर्यजनक पुरातत्व सम्बन्धी सामग्री को देख–देख कर लोगों के मन में स्वभावतः उनके पूरे–पूरे इतिहास को जानने की अभिलाषा उत्पन्न होती है और इस अभिलाषा की तृप्ति केवल संस्कृत साहित्य से ही होती है। क्योंकि समुद्रगुप्त का प्रयोग स्तम्भ, कुमार गुप्त का मन्दसौर अभिलेख, एहोल शिलालेख,रूद्रदामन शिलालेख आदि सभी संस्कृत में हैं। यह बताने की आवश्यकता नहीं, कि प्राचीन भारत का समूचा इतिहास क्या धार्मिक, क्या सांस्कृतिक क्या सामाजिक और क्या राजनीतिक–संस्कृत वांग्मय में ही संनिहित है।

वेदों के अति रहस्यमय ज्ञान से लेकर सामान्य जनजीवन के मनोविनोद से सम्बन्धित **''पंचतन्त्र''** की कथाओं तक जितना भी साहित्य वैभव विद्यमान है वह सब संस्कृत भाषा में ही सुरक्षित है।इसके अतिरिक्त आयुर्वेद और ज्योतियशस्त्र जैसे ग्रन्थ भी संस्कृत में ही लिखित है। मानव इतिहास से सम्बन्ध अत्यन्त बहुमूल्य और अत्यन्त उपादेय प्रामाणीक सामग्री संस्कृत में ही संचित हैं।

संस्कृत भाषा पूरे देश के साथ जुड़ी हुई है। संस्कृत भाषा के अमर उद्घोष **''संगच्छध्वं संवदध्वं''** के प्रतिक्षण अनुपालन की महती आवश्यकता है, तभी **''वसुधैव कुटुम्बकम्''** की कल्पना अपना वास्तवीक रूप ले सकती है।

डॉ0 इन्दिरा जुगरान
एसोसिऐट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग

Food and Nutrition

Nowadays every individual is having a busy lifestyles and everybody wants to lead a healthy life. But the problem is how to maintain our lifestyles and keep ourselves healthy and nutritious. So, if one has a proper knowledge of food and nutrition the problem of keeping ourselves fit and healthy would come to an end.

Food and nutrition is essential for every individual. Food acts as fuel in our body. It is the main basis of maintaining health. We get food from plants as well as from animals. On the other hand, nutrition is a dynamic process which comprises consumption of food to remain healthy. It gives nourishment to our body.

So the food which we all are consuming should be nutritious. Lacking of nutrition from food makes food of no value. We should avoid eating fast food like burgus, pizzas and street foods and in place of these foods we should go to nutritious foods like fruits and vegetables,salads, nuts and dryfruits and also homemade food which is so good for health.

Now it's in our hands that what food we want to consume. Is it to be the food which harms our body or is it to be the food which charms our body as well as our mind. In my opinion, take example from the nature. The nature is having its own beauty because it makes its food naturally besides all those junk foods. We are also the part of this nature and it's our responsibility to keep ourselves healthy like nature.

Shivanshi Uniyal
B.A II Year

ROLE OF ADEQUATE NUTRITION DURING PANDEMIC

Eating a healthy diet is very important during the COVID-19 pandemic. What we eat and drink can affect our body's ability to prevent, fight and recover from infections. Healthy diets are important for supporting immune system. Good nutrition can also reduce the livelihood of developing other health problems; including obesity, heart disease, diabetes and other types of diseases. Wearing masks and using sanitizers is essential but one also must prepare their body and immune system to fight against the virus. In such a case, short-term immunity boosters won't be helpful. It is best that you change your lifestyle, follow healthy habits, and incorporate the right kind of foods on a long term.

For maintaining a healthy diet, we must eat a variety of food, including fruits and vegetables. Every day, eat mix of whole grains like wheat, maize and rice; legumes like lentils and beans, plenty of fresh fruits and vegetables, with some foods from animal products like meat, fish, eggs and milk.

Choose wholegrain foods like unprocessed maize, millets, oats, wheat and brown rice; you can take these foods as these are rich in valuable fiber and can help you feel full for longer. For snacks, choose raw vegetables, fresh fruits, and unsalted nuts. Eat moderate amounts of fats and oils, avoid baked and fried foods that contain industrially produced trans-fat. Choose fresh fruits instead of sweet snacks such as cookies, cakes and chocolates. When other dessert options are chosen, ensure that they are low in sugar and consume in small portions. Drink enough water. Good hydration is crucial for optimal health.

A fluid in the circulatory system, known as lymph, carries infection-fighting immune around the body. It is largely made up of water; and when the body gets dehydrated, its movement slows down; sometimes leading to an impaired immune system. Physical activity is an important part of being healthy and supporting a healthy immune system. Regular exercise might improve immune functioning by boosting the overall circulation; making it easier for immune cells, other

molecules to travel easily throughout your body. The pandemic has taught us that no supplement will cure or prevent the diseases. Boosting one's immunity is one of the essential things; one has to follow proper healthy diet.

Monika
BA I year

मनरेगा

मनरेगा का द"र्ान या विचारधारा का स्त्रोत भारत का संविधान है जो कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21,39 (अ) एवं 41 में निहित है। मनरेगा भारत सरकार के द्वारा अन्य रोजगार कार्यक्रमों की व्यवहारिक सीमाओं को दूर कर मनरेगा पर केन्द्रित है।

मनरेगा विकास की एक रणनीति है। अतः इसकी प्रकृति एवं क्षेत्र अत्यधिक व्यापक एवं विस्तृत है। मनरेगा जनता को रोजगार प्राप्त करने का एक कानूनी अधिकार सौंपता है। अब तक ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में गरीबी रेखा के नीचे के व्यक्तियों को लक्ष्य समूह माना गया है। जबकि मनरेगा समस्त ग्रामीण समूह के लिये है। इस कानून के अंतर्गत आवेदक के द्वारा रोजगार की मांग की जानी है। अतः इसका वास्तविक लाभ उन्हीं व्यक्तियों को प्राप्त होगा, जिन्हें वास्तविक रुप से सरकार की सहायता एवं सहयोग की आव"यकता होगी।

मनरेगा के अंतर्गत गृहस्थ के किसी एक वयस्क सदस्यों को वर्ष में कम से कम 100 दिनों का श्रम रोजगार प्राप्त करने का अधिकार है, यह रोजगार गैर कुशल शारीरिक कामगारों को उपलब्ध है। यह बेरोजगारी की समस्या को दूर करने की दि"ाा में मनरेगा का वि"ोष महत्व है, क्योंकि इसका संबन्ध ऐसे क्षेत्र से है जहां सर्वाधिक बेरोजगारी है। आवेदक को आवेदन की तिथि से 15 दिनों के अंदर रोजगार उपलब्ध कराया जाना है। अन्यथा आवेदक को बेरोजगारी भत्ता दिया जायगा, रोजगार आवेदक के निवास स्थान से 5 किमी. की त्रिज्या के भीतर होना चाहिए एंव रोजगार का कार्य क्षेत्र इससे अधिक होने की स्थिति में यातायात भत्ता उपलब्ध कराया जाता है एवं रोजगार ऐसे कार्य के संदर्भ में दिया जाना है जिसका संबंध ग्रामीण आधारभूत संरचना को विकसित किये जाने से है। ऐसे प्रावधानों के माध्यम से कार्यो के प्रति कामगारों की कटिबद्धता को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया है, ताकि कार्य के गुणवत्ता स्तर में बढोतरी हो सके।

मनरेगा के माध्यम से पंचायतों वि"ोषकर ग्राम पंचायतों को अधिक स"ाक्त एंव सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया गया है। मनरेगा के अंतर्गत परिपालक अभिकरण के रुप पंचायतों की भूमिका को प्रोत्साहित करने पर वि"ोष बल दिया गया है, ग्राम पंचायतों के द्वारा ही गृहस्थों का पंजीकरण किया जाना है एवं जॉब कार्ड जारी किया जाना है। ग्राम पंचायतों के क्षेत्राधिकार में लागू की जाने वाली परियोजनाओं के लेखा परीक्षण का दायित्व ग्राम सभा को सौंपा गया है ताकि ग्राम पंचायतों को ग्राम सभा के प्रति अधिक जवाबदेह बनाया जा सके।

मनरेगा से सम्बन्धित सारे दस्तावेजों की सूचना के अधिकार में शामिल किया गया है। जिससे अधिक पारदर्शिता को प्राप्त किया जाना सम्भव हो पाया है। मनरेगा के अन्तर्गत कामगारों को भुगतान साप्ताहिक आधार पर किया जाना है जो कि किसी भी परिस्थिति में कार्य सम्पन्न होने के उपरान्त 15 दिनों से अधिक नहीं हो सकता है एवं भुगतान समुदाय के समक्ष किया जाना है। इस प्रावधान के माध्यम से दलालों की भूमिका को बाहर किया गया है। जिससे भ्रष्टाचार की सम्भावनाओं को कम से कम किया जा सके।

कार्यस्थल पर पीने के पानी, प्राथमिक स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सेवाओं के माध्यम से मानवीय पक्ष पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है। मनरेगा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करता है। जो कि भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल आधार है। इसके माध्यम से ग्रामीण जनता की आर्थिक आत्मनिर्भरता सुदृढ़ होती है जो कि ग्रामीण विकास के अन्य लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी सहायक सिद्ध होगा। मनरेगा ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन को रोकने में भी सहायक सिद्ध होगा। जिसका प्रभाव सामाजिक स्तर पर स्वाभाविक है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ करने में मनरेगा अप्रत्या"ाित संभावनाओं एंव अवसरों को व्यक्त करता है ब"ार्ते इसके परिपालन के दि"ाा में पारद"र्िक नियमों का अनुपालन दृढता से किया जाय जो कि मनरेगा के प्रावधानों में वर्णित है। यदि मनरेगा का परिपालन अधिनियम के शर्तो एंव भावनाओं के अनुरूप किया गया तो यह ग्रामीण क्षेत्रों के साथ–साथ भारत की द"ाा एंव दि"ाा को परिवर्तित कर सकता है।

डॉ मीनाक्षी शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग

संचेतना

विवेक युक्त आस्था, आस्था सहित विवेक

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद

HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE COUNCIL

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल

मासिक ई न्यूजलैटर **अंक *IV*,मार्च, 2022**

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद का चतुर्थ मासिक व्याख्यान

डॉ0 इन्दिरा जुगरान एसोसिऐट प्रोफेसर संस्कृत ने आयुर्वेदानुसार औषधिय पादपों के गुणधर्म व प्रयोग पर अपना व्याख्यान दिया। डॉ0 इन्दिरा जुगरान ने बताया कि आयुर्वेद से हमें जीवन का ज्ञान मिलता है तथा आयुर्वेद की शुरूआत औषधिय पादपों से हुई।

इसके साथ ही उनहोंने हमें औषधिय पादपों के कई गुणों से अवगत भी करवाया। उनहोंने बताया कि किस प्रकार विशैले रसाइनों से औषधिय पादपों को नुकसान हो रहा है तथा नुकसान से बचने के उपाय भी बताए।

डॉ0 इन्दिरा जुगरान ने हमें औषधिय पादपों से मिलने वाले कई नुसखों पर प्रकाश डालते हुए हमें औषधिय पादपों से अवगत भी करवाया जैसे पदमकाष्ट ,कपूरकचरी, कटाफल, कुटकी ,जंगली अंजीर, अमृता, जटामान्सी, अतिवृसा, चूलू, चिरायता, अप्राजिता, अश्वगंधा आदि।

उनहोंने बताया कि पदमकाष्ट के बीजों और पत्तों को मसाले के रूप में प्रयोग किया जाता है एवं पानी को शुद्ध करने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है। कपूरकचरी रक्त को शुद्ध करता है एवं त्वचा को निरोगी बनाता है।

कटाफल का तेल जोडों के दर्द को दूर करता है।कुटकी वजन को घटाने में लाभ देती है।अमृता तथा जटामान्सी त्वचा के घाव को मिटाने में लाभ देती है,दिल या ह्रदय की धडकन बड जाने पर इसका प्रयोग किया जाता है। इसके साथ ही उनहोनें हमें कई औषधिय पादपों का चित्रण भी फिल्माया।

सपादकीय

मैं मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद के समस्त सदस्यों का आभार प्रकट करती हूँ।'संचेतना'ई–न्यूजलैटर का चौथा संस्मरण छपने जा रहा है,इस हेतु मैं डॉ0 इन्दिरा जुगरान एसो0 प्रोफेसर संस्कृत विभाग एवं अकादमीक प्रभारी का धन्यवाद प्रकट करती हूँ।

इस परिषद के माध्यम से प्राध्यापक एवं छात्र–छात्राओं का ज्ञान वर्धन होता है।इस परिषद के माध्यम से हम किसी एक विषय–वस्तु पर परिचर्चा कर उसके निष्कर्ष पर पहुँच सकते है।मै प्रधान संपादक डॉ0 निशान्त भट्ट,अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग एव डॉ0 सोबन सिंह कोहली, असिस्टेन्ट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग,का धन्यावाद प्रकट करती हूँ।

अन्त में मैं डॉ0 रेनू नेगी, प्राचार्य राजकीय स्नाातकोत्तर महाविद्यालय,नई टिहरी, का भी धन्यावाद प्रकट करती हूँ जिनके पूर्ण सहयोग से इस ई–न्यूजलैटर 'संचेतना' का चतुर्थ अंक का सफल प्रकाश्न हो सका।

डॉ0 मीरा कुमारी
अस्सिटेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग

Editorial

I am very thankful to all the members of the Humanities and Social Science Council on the eve of publishment of the fourth edition of our e-newsletter 'SANCHETNA'.

It is the place where the teachers, students give their thoughts on a particular topics which is purely beneficial for all the people who read it.

Last but not the least ,I pay my sincere thanks to Academic Head of our Council Prof. Indira Jugran, I also give my thanks to the members of editorial board including Dr. S.S Kohli, Assistant Prof. Department of Sociology ,Dr. Meera Kumari , Assistant Prof. of Hindi. I am thankful to our Principal Prof Renu Negi , who gave us her unencumbered support for printing this e-newsletter and conducting the lectures.

Dr. Nishant Bhatt
Assistant Professor
Department of English

Linguistic Study of Sanskrit and English

सुरसा सुबोधा –विश्वमनोज्ञा
ललिता– हृदय रमणीय।।
अमृतवाणी संस्कृतभाषा
नैव क्लिष्टा न च कठिना।।

Sanskrit is an ancient and classical language of India. Rigveda was the first book in Sanskrit. It is believed that Vedas are dated by from 6500 B.C. During this period a vast literature – Vedas, Brahmana - Granthas, Aranyankas, Upanishad are Vedangas had come into existence Panini (500 B.C.) had a great impact in the development of Sanskrit literature. About ten grammar school were prevalent during his time, he wrote the master book of Sanskrit grammar named Ashtadhyayi which was a milestone in concising the grammar of Sanskrit and served as beacon for the later period.

Literary Sanskrit and spoken Sanskrit both followed Panini's system of language. According to Paninian Grammar and investigations of M.R. Kale, Sanskrit has 35 pronouns . Today the correctness of Sanskrit language is tested upon the touch stone of Panini's Ashtadhyayi. Sanskrit is said to Indo- Aryan or Indo – Germanic family of languages which includes Greek, Latin , English and other alike languages. There is more connections between Sanskrit and English.

Many English words actually have Sanskrit origins. Similarly, many Vedic religious concepts can also be found in western culture. Some Sanskrit words are difficult to be spelt in English as the Sanskrit has 42 letters and English has only 26. The differences in the pronunciation of ''c'' , ''kicking ka'' ''curly ka'' ''J'' and ''G'' in English are an issue. In mainstream some English words derived from Sanskrit, are as follows.

Root Sanskrit Words	Derived English Words
Sri	Sir
Gav	Cow
Matr	Mother
Sarpa	Serpent
Naas	Nose
Danta	Dental

Sanskrit has been studied by westerners, since the late 18th century. In the 19th century, the study of Sanskrit played a crucial role in the development of the field of comparative linguistics of the Indo-European languages.

Sanskrit grammar and its salient features are well captured in a computer program 'DESIKA' an analysis program based on Paninian grammar, 'DESIKA' includes Vedic processing as well. The English sentence always has an order of subject +verb+ object, while Sanskrit sentence has a free word order.

A free order language is a natural language which does not lead to any absurdity or ambiguity, thereby maintaining a grammatical and sematic meaning for every sentence obtained by the change in the ordering of the words in the original sentence.

Dr. Ashok Joshi
Assistant Professor
Department of English

Introduction to New Education Policy 2020

The New Education Policy of India 2020 (NEP 2020) which was approved by the Union Cabinet of India on 29th July 2020, outlines the vision of new education system of India. The new policy replaces the previous National policy on education,1986. The policy is a comprehensive framework for elementary education to higher education as well as vocational training in both rural and urban India.

K. Kasturirangan, an eminent scientist who steered the Indian Space Programme as chairman of (ISRO) Indian space Research organization for nine years, was the Chairman of the Committee for Drafting this policy. At the Bengaluru Tech Summit 2020 Kasturiangan explains how this new education policy could bring transformatory changes in India's education system.

New Education Policy gets green Signal to be implemented from 2022-23. It will be implemented from the academic year 2022-23.It will be implemented from the academic year 2022-23 has been cleared by the Union Cabinet. At the same time the human resource Ministry will be remained as education Ministry. The New education policy 2020 includes school education then higher education, other areas to be focused and most important quality and affordable Education for all.

According to the Ministry of human resource Development ''This National Education policy 2020 is the 1st education policy of the 21st century land aims to address the many growing development

imperatives of our country. This policy proposes the revision and revamping of scale aspects of the education structure, including with regulation and governance, to create a new system that is aspirational foals of the 21st century education, including SDG4, while building upon India's traditional and value system!

Dr. Nishant Bhatt
Assistant Professor
Department of English

My Erudition with Shakespearean Drama- 'Othello' and 'Twelfth Night'

William Shakespeare is considered the greatest dramatist, the world has ever known, as well as the finest poet who had written in English language. He is credited with thirty seven plays and had written memorable series of Sonnets which were a boon for the dramatic industry. Thomas Carlyle exclaimed " *The Indian Empire will go at any rate some day , but this Shakespeare does not go, he last for ever with us, we cannot give up our Shakespeare.*"This statement of Carlyle clearly shows that the Shakespeare was the brightest ornament and was the most cherished personality of his days.

WORKS OF SHAKESPEARE

S. No	Approximate year	Name of plays	No. of plays
01	1564-1594	Henry VI three parts, Richard III, Titus Andronicus, Love 's Labour's Lost ,The Two Gentlemen of Verona, The Comedy of Errors, The Taming of the Shrew.	07
02	1594-1597	Romeo and Juliet, A Midsummer Night Dreams, Richard II, King John, The Merchant of Venice.	05
03	1597-1600	Henry IV part I, Henry IV part II, Henry V, Much Ado About Nothing, Merry Wives of Windsor, As You Like It, Julius Caesar, Troilus ,Cressida.	08
04	1601-1608	Hamlet, Twelfth Night, Measure for Measure, All's Wells That Ends Wells, Othello, King Lear, Macbeth, Timon of Athens, Antony and Cleopatra, Coriolans.	10
05	1608-1616	Pericles,Cymberline , The Winter's Tale,The Tempest, Henry VIII.	05
		Total plays	**35**

Shakespeare had written total 35 plays during his life. He had written his maximum number of plays during 1601-1608.'Othello' and 'Twelfth Night' are the two plays of that period of Shakespeare which I have gone through.

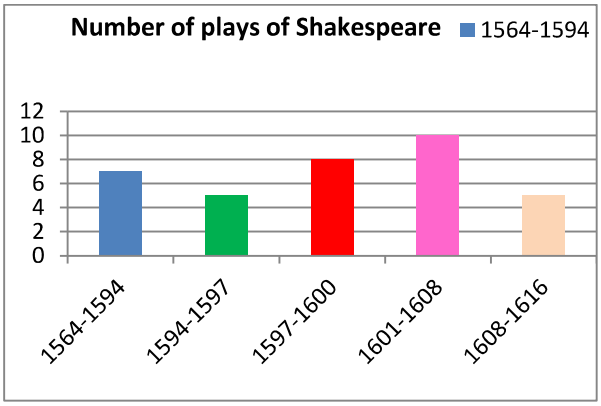

Some of his greatest works were written during the time of personal misfortunes like 'Twelfth Night'-a tragi comedy, which shows his dedication and love for his work and a mark of a great dramatist. Shakespeare had a great understanding of human soul in pain. He acquired knowledge of the world and the men and women living in it. He reveals the hidden depths of the human minds which clearly seen in his drama- 'Othello' where he created an environment of deep pain and sorrow at the end of the drama.

He gave his audience a feeling of separation of the hero from his beloved due to death, which shows profound emotional presentation of Shakespeare. He presented villain filled with revengeful spirit to evoke a feeling of the hatred in the audience. The play has a intense moral beauty. It makes a moral imagination. As in its presentation of figure of love Desdemona which does not alters for Othello. Shakespeare's 'Othello' is the mirror of real life experiences along with all his tragedies.

Another quality of Shakespeare is to make people laugh and entertain. His comic spirit was clearly seen in his 'Twelfth Night'. He used dramatic characterization and wit in his 'Twelfth Night'. He presented sentimental love of Duke with the music 'food of love' to Olivia and firstly created an environment to connect audience with the characters with emotions and music and at the end when the matter got disclosed he gave pleasure of laughter to the audience. This quality of Shakespeare shows that how nicely he used his characters of his drama with keeping the interest of the audience and to make them laugh on the characters. He gives his plays not only unity and vitality as well. He gave depth to his plays by using poetry, music, imagination, love, dialogues and climax, humour, wit, satire, dramatic irony and soliloquy which makes his plays more beautiful, glorious and valuable and becomes a bearer of pleasure to the audience.

Name:- Shivanshi Uniyal
Class:- B.A II Year

Why U.P.I Needs to Replace Swift

The west has retaliated against Russia, not with weapon but with finance. Russian bank have been cut off from Swift. Even Aadhar card and VISA have stopped their Russian operations. How will Russia receive International payment? This had created huge problem for Russian people, but this problem can be a huge opportunity for India but how???? Because of these three letters (U.P.I) unified payments interface.

How U.P.I. can help India at the Global level? But what is SWIFT? SWIFT (Society for Worldwide Interbank Financial Telecommunication) If you want to transfer funds internationally today the process for it is quite simple. You can visit a bank branch or fill up a form for the online and your money is transferred in sometime. You can transfer your funds to any country in the world. This is possible because of SWIFT.

SWIFT is a instant managing system which connect 200 countries and 11000 banks. In 2021 more than 4 crore transactions was done daily and it was handled by SWIFT. Swift system does not transfer any money. The money transfer is done by the banks. But how does the communication happen safely and securely? Swift solves this problem.

Since 1973 SWIFT has acted like a postman for the banking system and it keeps the power of the US dollar worldwide. On the face of it, SWIFT is an independent co- operative organization. But actually it is controlled by USA and European Union. SWIFT has a monopoly on international transactions whenever any country challenges western ideas it is removed from the Swift System. This directly impacts the economies of those countries.

In March 2012 the USA kicked Iran from Swift. This crashed Iranian Oil export by more than 50% North Korea is out of the Swift network for obvious reason Think about it…. Just because your ideologies don't match with other world leaders. You cut the entire population of that country from the Global financial System. What kind of logic is that?? How does it change the political ideology/there? If it is so ironic.

The US is a democracy but today the US has become so powerful that it behaves like a bully internationally. If dictates what is right and what it wrong So much power concentrated in the hands of one country is dangerous for world peace, several Russian banks have been kicked out of SWIFT . The connection of Russian banks with Global banks is served Russian entities have overseas loans of $121 billion.

Russia supplies oil and gas to Europe and the world 50% weapons and components. There has to be some or the other solutions to this. Not having SWIFT has caused a vaccum. That's why this vaccum needs to be solved because this will impact the whole world. And this is where India's financial technology comes in. If something has spread factor than covid in India. If is the use of UPI. UPI stands for unified payments interface.

Today from coffee to the stake of the company that cells me that coffee I can buy all of this in one single click with the help of UPI India has left USA and China behind in digital transactions. Is UPI possible internationally? Yes, NPCI or National Payments corporation of India informed the country that after revolutionizing payments in India Nepal has adopted UPI as well. Through a partnership with UAE'S Masheteq bank, Indian visitors can make payments in UAE , via UPI There are talks to enable UPI in to other countries. This men for the first time on such a big scale Indian Technology will make India proud. This is a proud moment for every Indian.

Name:-Priyanshu Singh
Class:- B.A II Year

संचेतना

विवेक युक्त आस्था, आस्था सहित विवेक

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद

HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE COUNCIL

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल

मासिक ई न्यूजलैटर

अंक V, अप्रैल 2022

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद का पांचवां मासिक व्याख्यान

डॉ हर्ष सिंह नेगी, विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग द्वारा 'पांच ट्रिलियन अर्थव्यवस्था – चुनौतियाँ एवं राहें' विषय पर व्याख्यान दिया गया। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने वित्त वर्ष 2024–25 तक भारत को 5 लाख करोड़ डॉलर (5 ट्रिलियन डॉलर) की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा है तथा कोरोना महामारी की वजह से यह लक्ष्य रुका हुआ है, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंच रहा है, जिसकी वजह से 2021 में भारतीय अर्थव्यवस्था – 7.3 फीसदी पर पहुंच गई है।

इसके साथ ही आर्थिक प्रणाली पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने आर्थिक गतिविधियों और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के बारे में बताया कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था निजी स्वामित्व और उत्पादनों के साधनों पर निर्भर करती है। जिससे बाजार में फर्मों के बीच प्रतिस्पर्धा उत्पन्न होती है। इसके साथ ही उन्होंने समाजवादी अर्थव्यवस्था के बारे में भी बताया जो सामाजिक स्वामित्व पर निर्भर करती है।

पूंजीवादी एवं समाजवादी अर्थव्यवस्था के अंतर को स्पष्ट करते हुए उन्होंने बताया कि भारतीय अर्थव्यवस्था, पूंजीवादी एवं समाजवादी अर्थव्यवस्था से मिलकर बनी एक मिश्रित अर्थव्यवस्था है। साथ ही उन्होंने भारत एवं चीन की अर्थव्यवस्था पर चर्चा भी की। साथ ही उन्होंने सकल घरेलू उत्पाद को बढ़ाने के उपाय भी बताए। अन्त में भारतीय सकल घरेलू उत्पाद में क्षेत्रीय योगदान के आंकड़ों को बताते हुए पांच ट्रिलियन अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को प्राप्त करने के उपाय भी बताए। उन्होंने आधारभूत संरचना को बढ़ाने तथा संसाधनों का पूर्ण रूप से उपयोग करने पर चर्चा की।

Editorial

I am very thankful to all the members of Humanities and Social Science Council on the eve of publishing of the fifth edition of our e-newsletter-" Sanchetna".

The newsletter is a place where the teachers, students share their thoughts on some particular topics which is purely beneficial for all the people who read it.

Last but not the least I pay my sincere thanks to Academic Head of our Council, Dr. Indira Jugran, Associate Professor, Department of Sanskrit. I also give my sincere thanks to the members of editorial board including Dr. S. S. Kohli, Asssitant Professor, Department of Sociology and Dr Meera Kumari, Assistant Professor, Department of Hindi. I am thankful to our Principal, Prof. Renu Negi who gave us her unencumbered support for printing this e-newsletter and conducting the lectures.

Dr. Nishant Bhatt
Assistant Professor

Department of English

सम्पादकीय

मैं मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद के समस्त सदस्यों का आभार प्रकट करती हूँ। 'संचेतना –ई न्यूजलैटर' का पांचवां संस्करण छपने जा रहा है, इस हेतु मैं डॉ0 इन्दिरा जुगरान, एसो0 प्रोफेसर संस्कृत विभाग एवं अकादमिक प्रभारी का धन्यवाद प्रकट करती हूं।

इस परिषद के माध्यम से प्राध्यापक एवं छात्र–छात्राओं का ज्ञान वर्धन होता है। इस परिषद के माध्यम से हम किसी एक विषय वस्तु पर परिचर्चा कर उसके निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं। मैं प्रधान सम्पादक डॉ0 निशान्त भट्ट, विभागाध्यक्ष अंग्रेजी विभाग एवं डॉ सोबन सिंह कोहली, असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग का धन्यवाद प्रकट करती हूं।

अन्त में मैं डॉ0 रेनु नेगी, प्राचार्य राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नई टिहरी का भी धन्यवाद प्रकट करती हूं जिनके पूर्ण सहयोग से इस ई–न्जूजलैटर 'संचेतना' का सफल प्रकाशन हो सका।

डॉ मीरा कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग

The Strategic History Of The Russia-Ukraine Conflict In Short

The current war between Russia and Ukraine can be termed as a proxy war between Russia and the Western powers wherein Ukraine is being supported by the west to arrive at their own strategic interests in Eastern Europe. This war which is also being called "Putin's War" is being fought with missiles, drones and special forces on the one hand and social media disinformation campaigns and fake news on the other. This only goes on to create confusion as to what the reality of the situation is, amongst the majority of the people interested in the conflict. In order to understand the current situation between Russia and Ukraine one needs to have a look at the history of strategic relations between the western powers and the Soviet Union/Russia. This will help us in understanding the strategic logic behind the Russian invasion of Ukraine.

At the end of the Second World War which saw allied forces victorious, the two major powers of the time, the United States and the Soviet Union entered "A New World Order" in terms of ideology and strategy and the world shifted from multi-polarity to a Bi-polar situation. In this bi-polar situation the global politics was dictated by the above mentioned powers and their followers. The western powers led by the United States formed the North Atlantic Treaty Organization (NATO) in April 1949 in order to check the rise of the Soviet Union and Communism and also as a mechanism to prevent further conflicts between the European countries. After the entry of Western Germany in NATO in 1955, the Soviet Union in turn established the Warsaw Treaty Organization, also known as the Warsaw Pact in order to rally its allies behind its aim of checking the western influence in Eastern Europe. Overall "Collective Security" was the main reason for the formation of these above mentioned organizations

In the nineties the Soviet Union dissolved because of various reasons both ideological and economic, and the western powers saw this as an opportunity to further weaken the already declining Russian power which even after the dissolution of the Soviet Union still yielded a tremendous influence over the Central and Eastern European Countries. The Soviet Union had dissolved but its heart-Russia, did not. This was one obstacle which the West desperately wanted to tackle. Another aspect which threatened the western interests was the rise of China.

NATO continued to expand with the entry of Poland in 1999 and many more countries later till 2020, many of which were in the so called Russian sphere of influence. An alarmed Russia now wanted to push the western economic and military pressure westwards, which included sabotaging NATO's attempt to recruit Georgia, Finland, Sweden and of course Ukraine in its fold. NATO's expansion towards east including Ukraine will mean encirclement of Russia from the South.

Ukraine even after its independence in 1991, has ever since been in the Russian sphere of influence. But also ever since, Ukrainian politics and political revolutions have seen proxy wars between the Western powers and Russia, with both powers backing opposing groups and parties. By 2008 there were official talks about a Ukrainian NATO

membership and also attempts by Ukraine to join the European Union after 2014, when pro-western governments started assuming power in Ukraine. An alarmed Russia annexed Crimea from Ukraine in 2014. Besides this, the Donbass region (comprising Luhansk and Donetsk) which has a majority Russian population declared its sovereignty from Ukraine.

This strategic history will give us an understanding of the circumstances that have led to the invasion of Ukraine by Russia in 2022.

The Russia of today is a powerful country with a majority of European countries dependent on it for their energy needs (The Nord Stream). The United Nations and other world powers should try everything in their means to prevent an escalation between the NATO and Russia. All the sides involved should halt their aggressive interventions in Ukraine, or else this situation has the potential to escalate into the largest military conflict since the second world war and might even lead to a nuclear war which would be catastrophic.

In the current state of affairs even as Russia attempts to preserve or boost its global influence,it must stop its intervention in Ukraine. The Western world including the United States must guarantee the existence of Ukraine as a neutral buffer zone in the same manner as the United States had demanded of Soviet Union, the removal of nuclear missiles from its backyard Cuba in the year 1962.

And above all, the voice of the Ukrainians should be heard.

Dr Jayendra Sajwan
Assistant Professor
Department of Geography

A Camp to Chawal-Khet Village

Last month I went to Chawal Khet village, a village near Dhaizar, New Tehri. The journey began from 23rd of March with friends and teachers at 12 noon. After reaching the destination, the view of the village seemed to be full of greenery and pine trees and the raw

path to the village was under construction. After reaching the stay at the Government Upper Primary School, we prepared our meal together. Next morning we visited other areas of the village and met with people of the village also. They used to do subsistence farming of wheat and also animal husbandry and some of them were depend on shops as their source of monthly earnings. Basically the society was agrarian society and the people used to communicate mostly in Garhwali language and have lack of medical and irrigation facilities. Besides this we did activities like collection of plastics and garbage and cleaning of roadsides.

As very well said that' culture is a learnt behaviour' the camp had given me an opportunity to conjoin myself with culture of Garhwal and a platform to interact and communicate with village people and Society. In the valedictory function, activities like dancing and singing on folk music of Garhwal were performed. The performance or

traditional dresses for the folk dance and presented the Herbals culture which gave immense pleasure to the audience. Besides this, professes also visited the camp to communicate and interact with students.
After spending seven days at the camp, we went back to our homes. But it was a great experience for me. I involved in activities like management and leadership and gain practical knowledge of my subjects. The camp had given me a bag of memories and a platform to learn the art of living.

Shivanshi Uniyal
BA II

WHY I BELIVE IN Rama(Four REAL LESSON FROM RAMAYANA)

Do you believe in Lord Rama ?

Not religiously but practically!

These days we find the need to clarify this because everyone want's Ramrajya. Nobody wants to be like Rama.

Four practical things we can learn from Lord Rama.

1. RESPECT YOUR PARENT'S

Today, we live in such times where parents send their kids to boarding school, And those kids send their parents to an old age home.It is difficult to connect with each other. In spite of having good intention we became villain in their eyes.

Dashrath wanted Loard Rama to be the king and Rama knew Dashrath would not be unjust on purpose even then because of the circumstance Rama had to bear 14 years of vanvas.

Circumstances and situations, they're these things which make our close ones the villians of our story but we call prince Rama as Lord Rama because he tried to understand his father's actions.

Everyone sees life from their own perspective but seeing things from a different perspective is not everyone's cup of tea.

Can we try to be a better son or daughter like Lord Rama?

2. IMPORTANCE OF CO-OPERATION

Vanvas is a Metaphar . Life after education is a corparate vanvas where we meet all kinds of people!Rama is a divine entity because we can restart from zero . But he had to put his ego aside and take help whether it was Jatayu,the Vanar Sena or Shabri.

Till the time we are in a protected zone whether it is home , our college or our school we are in our comfort zone, we have the freedom to behave as we wish but roaming like a prince/ princess in the outside world? That is an option we really don't have , we need help if we want to survive in this world and the best human is the one who respects a janitor and a CEO the same without distinction.

Can we try to respect every single person?

3. A PROMISE IS A PROMISE

Friendship and toxic friendship-only one thing distinguishes them.Toxic friendship is completely one sided there are friends who only want to take undue benefit of you either because of your skills or your social connections. They stay friends with you for some personal gain they are not your true friends!

Sugreev asked for help to win his kingdom back. He promise to take Lord Rama to Lanka in return but as soon as he won his kingdom back Sugreev forgot is promise.

People say that your network is your net worth but the network that wants a favour from you but doesn't come forward to help you in times of trouble. That is not your network. Some friends are parasites who believ in one sided friendship.

Can we learn to identify such toxic friends?

4. TRUST YOUR PARTNER

We know the sacrifices Lord Rama had to do bring Sita home. How he went from north India to Lanka ! How he made Ram Setu with the help of Vaanar Sena. At the same time we cannot forget that Ma Sita tolerated Ravan's mental torture as well she was patient to believe that Lord Rama would save her at any cost. In a partnership whether it is a business partnership or a romantic one, trusting your partner is like winning half the battle.

Can we bring trust like Rama and

Sita in our relationships?

Priyanshu
BA II Year

संचेतना

विवेक युक्त आस्था, आस्था सहित विवेक

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद

HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE COUNCIL

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल

मासिक ई न्यूजलैटर

अंक VI,मई 2022

संपादकीय

प्रिय पाठकों, छात्रों !

संचेतना का छठा अंक आपके सामने है। आज की बाजारवादी अर्थव्यवस्था के इंस्टेंट युग में विचार, कल्पना, अभिव्यक्ति और हमारे बोध का स्वरूप भी बहुत कुछ रेडीमेड हो गया है यहां तक कि अपने नितांत निजी संबंधों में भी हम उधार की छिछली और सतही अभिव्यक्तियों से काम चलाते हैं। ऐसे में संचेतना का मुख्य उद्देश्य अपने छात्र छात्राओं में अभिव्यक्ति कौशल का विकास करने के साथ ही उन्हें अपने आसपास के मुद्दों पर स्वतंत्र चिंतन के लिए प्रेरित करना है। इस संदर्भ में संचेतना का कार्य भले ही छोटा हो लेकिन महत्वपूर्ण है। इसी अंक में बीए द्वितीय वर्ष के छात्र प्रियांशु सजवान का आलेख शिक्षा व्यवस्था में परीक्षाओं की भूमिका पर नए सिरे से विचार की आवश्यकता को रेखांकित करता है। शिवांशु उनियाल ने अर्थशास्त्र विषय की प्रासंगिकता और महत्व को अपने आलेख में बताया है। डॉ. श्रद्धा सिंह ने अपने लेख में आज के जीवन में पैदा बोर्डम, उब, बेचैनी और निरर्थकताबोध से मुक्ति के उपाय सुझाती हैं। इस अंक से हम एक नया कॉलम 'इस महीने का शब्द' शुरू कर रहे हैं जिसमें ज्ञान के अलग-अलग अनुशासनों से प्रत्येक माह एक नया पारिभाषिक शब्द देंगे जिससे पाठक लाभान्वित होंगे। आशा है आप अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों से हमें अवगत कराएंगे ताकि हम संचेतना को और बेहतर बना सकें।

मैं हवाओं का रुख तो नहीं बदल सकता,
पर मैं अपनी रहगुजर तो बदल सकता हूं।

शुभकामनाओं सहित संजीब नेगी।

Sixth Monthly Lecture by Dr Nishant Bhatt on Topic- **English: Today and Tomorrow**

कला और मानविकी परिषद की माह अप्रैल की गतिविधियां

डॉ0 निशांत भट्ट विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग द्वारा 'आधुनिक अंग्रेजीः वर्तमान एवं भविष्य' विषय पर व्याख्यान दिया गया। उन्होंने अंग्रेजी भाषा के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि अंग्रेजी भाषा 1700 शताब्दी की भाषा है तथा यह भाषा औद्योगिक क्रांति से उत्पन्न हुई भाषा है और तकनीकी विकास से अंग्रेजी के शब्दों की समाज में आवश्यकता पडी।

उन्होंने अंग्रेजी भाषा की विशेषताओं पर चर्चा करते हुए बताया कि अंग्रेजी भाषा एक सरल, लचीली एवं स्पष्ट भाषा है।साथ ही उन्होंने अंग्रेजी भाषा की विशेषताओं पर चर्चा करने के साथ–साथ बताया कि अंग्रेजी भाषा 360 मीलियन लोगों में पूरे विश्व में बोली जाती है और 118 देशों में पढाई जाती है एवं यह भाषा विचारों का आदान–प्रदान करने के लिए पूरे विश्व में बोली जाती है।

अंग्रेजी भाषा के दायरों को बताते हुए उन्होंने भाषा को विज्ञान, गणित, तकनीकी एवं पर्यटन की भाषा बताते हुए अंग्रेजी भाषा के महत्व पर चर्चा की और बताया कि अंग्रेजी एक वैश्विक एवं इंटरनेट की भाषा है।

जीवन के प्रति बच्चों जैसा उत्साह बनाए रखना जरूरी है

डॉ0 श्रद्धा सिंह, समाजशास्त्र विभाग

अक्सर देखा जाता है कि बच्चों में हर चीज के प्रति अत्यधिक उत्साह होता है। सूबह उठने से लेकर रात को सोने तक वे हमेशा ऊर्जा से भरे रहते हैं। उनमें एक –दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा का भाव भले हो, किंतु वे अपने दिल के भीतर नफरत सींचकर नहीं रखते । वे कुछ भी नया जानने के लिए आतुर रहते हैं। उन्हें न तो अनदेखे भविष्य की चिंता होती है और न ही वे अपनी आत्मा पर बीते हुए कल का बोझ ढोना पसंद करते हैं। पर, हमारे जीवन का दूसरा पहलू यह है कि जैसे–जैसे हम बडे और परिपक्व होते हैं। वैसे–वैसे इस उत्साह, मस्ती और जिंदादिली से वंचित होते जाते हैं। स्कूल–कॉलेज की शिक्षा पूरी करने के बाद जब जीवन के वास्तविक संघर्षों से दो– चार होना पडता है तो जीवन के प्रति उत्साह में अचानक कमी महसूस होने लगती है।

कई समाजशास्त्रियों, दार्शनिकों और सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने अपने–अपने तरीके से इस उत्साहहीनता की व्याख्या की है और इससे मुक्त होने के उपाय भी बताए हैं। वस्तुतः उन विद्वानों ने इस समस्या को 'अलगाव' (अर्थात लगाव न होना) का नाम दिया है जो अंग्रेजी शब्द (alienation) का हिंदी समतुल्य है। कार्ल मार्क्स जैसे समाजशास्त्री ने इसकी व्याख्या अर्थव्यवस्था के आधार पर की है तो ऐरिक फ्रॉम जैसे मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्ति के 'मन के स्तर' पर। मैक्स वेबर ने इसकी व्याख्या समाजशास्त्रीय

तथा प्रशासनिक दृष्टिकोण से की है, तो हीगेल,कीर्केगार्द और सार्त्र जैसे विचारक इस समस्या को दर्शन की सूक्ष्मताओं के स्तर पर विश्लेषण करते हैं। मैं कोशिश करूँगी कि इन सभी बातों को समाहित करते हुए सरल भाषा में जीवन कों बेहतर बनाने के लिए उपयोगी सूत्र एकत्रित करूं।

पहला सूत्र यह है कि जीवन में रचनात्मकता या 'क्रियेटिविटी' की कुछ न कुछ संभावना बनी रहनी चाहिऐ। इस बिंदु पर विशेष रूप से कार्ल मार्क्स और मैक्स वेबर ने बल दिया है। मार्क्स ने कहा है कि मनुष्य तभी तक मनुष्य रहता है जब तक वह अपनी छठी इंद्रिय (sixth sense) का प्रयोग करता रहता है। मार्क्स के दर्शन में छठी इंद्रिय शब्द का प्रयोग रचनात्मक क्षमता के अर्थ में किया गया है। उन्होंनें बताया है कि जब तक कोई व्यक्ति किसी भी तरह के रचनात्मक कार्य से जुडा रहता है, उसमें सार्थकता का अहसास बना रहता है । इस सार्थकता को बनाए रखने का एक ही तरीका है कि हमे अपने जीवन का समय रचनात्मक कार्यों में गुजारना चाहिए।

दूसरा सूत्र यह है कि जीवन में कोई न कोई उद्देश्य विद्यमान होना चाहिए। यह जरूरी नहीं है कि उद्देश्य बहुत बडा हो। जरूरी सिर्फ इतना है कि जीवन में उद्देश्य विद्यमान होना चाहिए।किसी विद्यार्थी के लिए परीक्षा में सफल होना उद्देश्य हो सकता है तो किसी नेता के लिए चुनाव जीतना। किसी का उद्देश्य धार्मिक कियाकलाप हो सकता है तो किसी कर्मचारी के लिए आय– वृद्धि तथा पदोन्नति हासिल करना उद्देश्य हो सकता है।

तीसरा सूत्र यह है कि व्यक्ति को किसी–न–किसी सामाजिक कार्य से जुडे रहना चाहिए। इस सूत्र की प्रभावशाली व्याख्या प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक ऐरिक फ्रॉम ने कार्ल मार्क्स के वैचारिक सूत्रों के आधार पर की है। मार्क्स ने कहा था कि व्यक्ति को गहरा संतोष तभी मिलता है जब उसे महसूस होता है कि उसने अपने समाज के लिए कोई योगदान दिया है। फ्रॉम ने अमीर लोगों को सलाह दी है कि अगर वे वास्तविक संतोष हासिल करना चाहते है तो अपने समय और धन का कुछ हिस्सा उन लोगों पर खर्च करें जो आर्थिक प्रतिस्पर्धा में पीछे छूट गए हैं और गंभीर रूप से वंचित हैं। ऐसा करने से उन वंचित व्यक्तियों की तो जो मदद होगी, सो होगी, उससे अधिक मदद उन अमीरों की होगी जो अत्यधिक धन कमाने के बावजूद अपनी सार्थकता की अनुभूति के लिए कोई वजह तलाश पाते हैं।

एक शिक्षक विद्यारूपी धन ही अपने छात्रों को देता है चाहे प्राचीन गुरूकुल की व्यवस्था हो या आज की आधुनिक प्रणाली विद्यारूपी धन को देने पर एक शिक्षक, आचार्य को परम संतोष एवं उत्साह की अनुभूति होती है। इसलिए वेदशास्त्रों में भी कहा गया है विद्या को संचय नहीं बाँटना चाहिए:–

न भ्रातृभाज्यं न च भारकारी।
व्यये कृते वर्धते एवं नित्यं, विद्याधनं सर्वधन प्रधानम्।।

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं बिद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धि मायाति क्षयमयाति स!।।

वास्तव में ये खजाना सचमुच अदभुत है, जो खर्च करने से बढता है, और जमा करने से कम होता है। जीवन में उत्साह बनाए रखने के कुछ और भी सूत्र है। पहला यह है कि उम्र चाहे जितनी भी हो जाए, व्यक्ति को अपने भीतर के बच्चे को मरने नहीं देना चाहिए। अपने भीतर के बच्चे को जिंदा रखने का अर्थ सिर्फ इतना है कि संकोच और झिझक को खुद पर हावी नहीं होने देना चाहिए। इसी में दूसरा सूत्र यह है कि अपनी व्यस्त से व्यस्त दिनचर्या में भी कुछ समय अच्छे दोस्तों और रूचियों के लिए जरूर निकालिये।

वास्तव में उत्साह से भरा जीवन एक ऐसा वरदान है जिसका महत्व उन्हें ही समझ आता है जो इस वरदान से वंचित हो गए हैं।

ब्रेल लिपि अथवा ब्रेल पद्धति

डॉ मीरा कुमारी, हिन्दी विभाग

ब्रेल पद्धति एक तरह की लिपि है, जिसको विश्व भर में नेत्रहीनों को पढ़ने और लिखने के लिए व्यवहार में लाया जाता है। इस पद्धति का आविष्कार 1821 में एक नेत्रहीन फ्रांसीसी लेखक लुई ब्रेल ने किया था। यह अलग–अलग अक्षरों, संख्याओं और विराम चिह्नों को दर्शातें हैं। ब्रेल के नेत्रहीन होने पर उनके पिता ने उन्हें पेरिस के रॉयल नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड चिल्ड्रेन में भर्ती करवा दिया। उस स्कूल में 'वेलन्टीन होउ' द्वारा बनाई गई लिपि से पढ़ाई होती थी, पर यह लिपि अधूरी थी। इस विद्यालय में एक बार फ्रांस की सेना के एक अधिकारी कैप्टन चार्ल्स बार्बियर एक प्रशिक्षण के लिए आये और उन्होनें सैनिकों द्वारा अंधेरे में पढ़ी जाने वाली 'नाइट राइटिंग' या 'सोनोग्राफी' लिपि के बारे में व्याख्यान दिया। यह लिपि कागज पर अक्षरों को उभारकर बनायी जाती थी और उसमें 12 बिन्दुओं को 6–6 की दो पंक्तियों में रखा जाता था, पर इसमें विराम चिह्न, संख्या, गणितीय चिह्न आदि नहीं होते थे। 'ब्रेल' को वहीं से यह विचार आया। लुई ने इसी लिपि पर आधारित किन्तु 12 के स्थान पर 6 बिन्दुओं के उपयोग से 64 अक्षर और चिह्न वाली लिपि बनाई। उसमें न केवल विराम चिह्न बल्कि गणितीय चिह्न और संगीत के नोटेशन भी लिखे जा सकते थे। यही लिपि आज सर्वमान्य है। लुई ने जब यह लिपि बनाई तब वे मात्र 14 वर्ष के थे। सन् 1824 में पूर्ण हुई यह लिपि दुनिया के लगभग सभी देशों में उपयोग में लायी जाती है। इसमें प्रत्येक आयताकार सेल में 6 बिन्दु यानि डॉटस होते है, जो थोड़े–थोड़े उभरे होते हैं। यह दो पंक्तियों में बनी होती है। इस आकार में अलग–अलग 64 अक्षरों को बनाया जा सकता है। सेल की बायीं पंक्ति में ऊपर से नीचे 1,2,3 बने होते हैं, इसी तरह दांई ओर 4,5,6 बने होते है। एक डॉट की औसतन ऊंचाई 0.02 इंच होती है। इसको पढ़ने की विशेष तकनीक होती है। ब्रेल लिपि को पढ़ने के लिए अंधे बच्चों में उतना ज्ञान होना आवश्यक है कि वे अपनी उंगली को विभिन्न दिशाओं में सेल पर घुमा सकें।

वैसे विश्व भर में इसको पढ़ने का कोई मानक तरीका निश्चित नहीं। ब्रेल लिपि को स्लेट पर भी प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अलावा इसे ब्रेल टाइपराइटर पर भी प्रस्तुत किया जा सकता है। आधुनिक ब्रेल स्क्रिप्ट को 8 डॉटस के सेल में विकसित कर दिया गया है, ताकि अंधे लोगों को अधिक से अधिक शब्दों को पढ़ने की सुविधा उपलब्ध हो सके। 8 डॉट्स वाले ब्रेल लिपि सेल में अब 64 के बजाय 256 अक्षर, संख्या और विराम चिह्न के पढ़ सकने की सुविधा उपलब्ध हैं। ब्रेल पद्धति को

वर्णमाला के वर्णो को कूटरूप में निरूपित करने वाली सबसे प्रथम प्रचलित प्रणाली कह सकते हैं, किन्तु ब्रेल लिपि नेत्रहीनों के पढ़ने और लिख सकने के उपाय का प्रथम प्रयास अध्याय नहीं है। इससे पहले भी 17वीं शताब्दी में इटली के जेसूट फ्रांसिस्को 'लाना' ने नेत्रहीनों के लिखने पढ़ने को लेकर काफी कोशिशे की थी।

Significance of Studying Economics

Shivanshi Uniyal, B.A. II

For over a century Economics as a subject has great significance. Economics is derived from the Greek words "Oikos" and "Nomos" which means "a house" and "to manage" respectively. The Greek applied this term to the city state which they called "Polis". Aristotle described economics as "household management". It gives us knowledge about how industries, businesses and government work for the interest of public and how fluctuations in prices of goods and income of the consumer affect the market forces.

Besides this, the subject tells us that to become a rational man in society, it is necessary to make arrangements for food, shelter and clothes and to make choices under conditions of scarcity of resources. For this it is essential to generate income and to meet expenses. Our activities to generate income are termed as economic activities, wherein lies the origin and development of Economics as a subject matter.

Adam Smith, father of Modern Economics defined Economics as "Science of Wealth". Economics has a great dependency on mathematics and statistics in its pursuit of finding answers of social problems so as to increase welfare of the people. For example, the development of Human Development Index which is a tool for mapping social and economic problems and educational development of the country.

Another eminent personality who tried to define economics is Alfred Marshall who said "economics is the study of mankind in the ordinary business of life and to examine that part of individual and social action which is mostly closely connected with the attainment and with the use of material requisites of well-being." Thus economics also tells that how human satisfies his unlimited wants with limited resources which have alternative uses and out of these alternative uses of scarce resources the society has to make choices. This problem of scarcity and choices forms the core of Economics.

Whereas, according to professor Robbins Economics is "a science which studies human behavior as relationship between ends and scarce means which have alternative uses." Therefore, studying economics is useful to understand the corporate world, markets, social problems, environmental activities, legal and political activities, decision making and allocation of resources.

Why Examinations Fail Our Students ?

Priyanshu Singh Sajwan, B.A. II

Our education system is turning us into mental slaves and the proof is our EXAMS! From students to teachers we all are frustrated with exams (FRUSTRATED!), but why?, what is that one fault in our education system that needs to be taken care of as soon as possible? If we want our students to become better learners what do we need to do? (Let us understand why exams fail our youth). We're going to implement a New Education Policy soon. Our ideas need to reach the decision makers.

(PROBLEM NO.1-NO CONCEPTUAL LEARNING)

What's wrong with exams? This is because exams do not focus on conceptual learning. There is a line in the film - 3 Idiots (chabuk ke dar sea sher bhe kursi par baithna sikh he jata hai lekin hum us sher ko well trained kahate hai 'well educated' nahi).When we all heard this line we clapped loudly for sure. But 13 years have passed since the release of the movie. Did we change the structure of our exams? No….Not at all. People often argue, what other option do we have? Are there any better options to evaluate our children? The answer is this…. it is called Bloom's Taxonomy which divides our learning process into 6 different stages. We begin by reading and understanding things, the focus is on understanding and on application of learning. Then application of knowledge is analyzed. The result is evaluated and the learning process is concluded with creativity. For example: Newton's laws of motion. Instead of learning this in a closed classroom we can learn this concept in a ground. We are taught this repeatedly that whatever our textbooks say is the absolute truth but if what is written in the textbook is the truth then why are our textbooks becoming outdated. Why don't we update the method of learning?

(PROBLEM NO.2-EXAM FIRST MINDSET)

What's wrong with exams? Because after we write the exams we forget everything that we have learned. We give so much importance to marks scored in exams that some students end up cheating. 64% of the students globally have candidly admitted that they have cheated some times in exam. The remaining 36% are LYING!!! Think about it!! The marks that you can achieve by cheating….are those marks really that genuine? You can cheat in exam! But you can't cheat life! The students who use dishonest methods to pass in exams end up failing somewhere in life because their focus is on certificate. (REMEMBER YOU CAN LIE ON

YOUR CV BUT YOU CANNOT LIE AT WORK) The marks you scored in your exams can only take you to the interview stage but whether you will be given a job or not and whether you will progress in your job…. depends on your skills and you can learn many useful skills from online learning portals like UNACADEMY. UNACADEMY is one of the most trusted app for learning and for expanding your knowledge. Unacademy is an online platform that makes both learning and teaching easy with its educational videos and lecture. It was founded in the year 2010 with videos uploaded on YouTube, but it officially got launched in the year 2015. You can give your creativity a chance to breathe freely here and can learn at your own pace. There is a lot of information available online but this information is not organized properly. I get value in small chunks on Unacademy and that is why i love Unacademy.

(PROBLEM NO. 3-WE ALL ARE DIFFERENT)

Rahul Dravid is one of my favorite cricketer. In an interview, he said "exams are not the only way to judge boy and girls". Why did he say that? All student are not same, some students learn by experiencing things, some learn by observing others, some students study while listening to music.. just think about it. Does our education system give an equal opportunity to all these different type of students? Or does it give a preference to students who are good at memorizing things. The fact is, all of us come from different backgrounds but only one type of learner gets an advantage in exams.

(PROBLEM No.4-THE RAT RACE)

What's wrong with exams? Though exams prepare us for competition, it isn't a healthy one. I am talking about comparison based competition. When my father was a student, getting 90% was a big deal because 90% was a tough job and very few students got 90% marks and above. But now, getting 90% seems like no big deal. WHY? Because we never see the number of people behind us… we only see how many people are ahead of us. This attitude keeps us unhappy life-long because we can't tolerate other getting better marks than us. Rather than crying about my marks, my family was more concerned about my best friend's marks. This never improved my marks but it ended up spoiling my friendship for sure.

Indian Economy: A Story of Growth

Arti, MA 1st Sem

India is a middle income developing market economy. It is the world's fifth largest economy by nominal GDP and the third largest by purchasing power parity (PPP).Since independence in 1947 until 1991, successive governments promoted protectionist policies, with extensive state intervention and economic regulation. This *dirigisme* is characterized in the form of **License Raj.** The end of the Cold War and the acute balance of payments crisis in 1991 led to the adoption of a policy of broad economic liberalization of India.

At the beginning of the 21st Century annual average GDP growth rate was 6% to 7% and during the 2008 global financial crisis, the economy faced a mild slowdown. India undertook stimulus measures (both fiscal and monetary) to boost growth and generate demand. In subsequent years, economic growth revived. According to the World Bank, to achieve sustainable economic development, India must focus on public sector reform, infrastructure, agricultural and rural development, removal of land and labor regulations, financial inclusion, spur private investment on public health, spur private investment on exports, education and public health.

Starting in 2012, India entered a period of declined growth, which slowed to 5.6%. Other economic problems also became apparent: a plunging Indian rupee, a persistent high current account deficit and slow industrial growth.

Indian economic recovery started in 2013-14 when the GDP growth rate accelerated to 6.4% from the previous year's 5.5%. The acceleration continued through 2014-15 and 2015-16 with growth rates of 7.5% and 8% respectively. For the first time since 1990, India grew faster than China which registered 6.9% growth in 2015. However the growth rate subsequently decelerated to 7.1% and 6.6% in 2016-17 and 2017-18 respectively. This was partly because of the disruptive effects of government policies of 2016 and in particular of banknote demonetisation and the implementation of Goods and Services Tax.

COVID-19 affected Indian economy, from April to June 2020, India's GDP dropped by a massive 24.4%. According to the latest National Income Estimates, in the second quarter of the 2020-21 financial year, the economy contracted by a further 7.4%.The recovery in the third and fourth quarters was still weak, with GDP rising by 0.5% and 1.6% respectively. This means that the overall rate of contraction in India was (in real terms) 7.3% for the whole 2020-21 year.

Word of the Month

जी.डी.पी. (सकल घरेलू उत्पाद) – किसी देश की भौगोलिक सीमा के अन्तर्गत एक वर्ष में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को 'सकल घरेलू उत्पाद' कहते हैं।

यह न्यूज लेटर पूरी तरह अव्यवसायिक है तथा इसका प्रकाशन मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद के सदस्यों द्वारा छात्र हित में किया गया है।

संचेतना

विवेक युक्त आस्था, आस्था सहित विवेक

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद

HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE COUNCIL

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल

मासिक ई न्यूजलैटर

अंक VII ,जून 2022

संपादकीय

प्रिय पाठकों ! संचेतना का सातवां अंक आपके हाथों में है। पिछले अंक से हमने संचेतना को शहर के गणमान्य व्यक्तियों और बुद्धिजीवियों तक पहुंचाने का निर्णय लिया और उन तक संचेतना का अंक पहुंचाया भी। उन सब ने छात्र-छात्राओं की रचनात्मक प्रतिभा को मंच देने के लिए इस लघु प्रयास की सराहना की। यह हमारे लिए संतोष की बात है। इसी क्रम में इस अंक में महाविद्यालय की छात्रा मनिका ने प्रख्यात पर्यावरणविद श्री विजय जड़धारी जी का साक्षात्कार लिया है। छात्र-छात्राएं विभिन्न विषयों में शोध प्रविधि के बारे में पढ़ते हैं लेकिन संचेतना में वे साक्षात्कार कैसे लिया जाता है उसकी तकनीक क्या है आदि के बारे में व्यवहारिक धरातल पर सीखते हैं। उत्तराखंड में पलायन एक बड़ी समस्या के रूप में चिन्हित किया गया है। इस समस्या पर युवा क्या सोचते हैं इसको सौरव पंवार ने अपने आलेख में रेखांकित किया है। 5 जून पर्यावरण दिवस के अवसर पर देश भर में पर्यावरण जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित किए गए। हमारी परंपरा और दर्शन में मनुष्य इस विशाल ब्रह्मांड का एक हिस्सा भर है जबकि पाश्चात्य आधुनिक विज्ञान और दर्शन में मनुष्य इस प्रकृति का मालिक है। इसी पर एम. ए. संस्कृत की छात्रा शिवानी ने 'वेदों में पर्यावरण' विषय पर लेख लिखा है। **अवार भाषा के प्रसिद्ध रूसी कवि रसूल हमजातोव ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'मेरा दगिस्तान' में लिखा है - "पहाड़ी आदमी को दो चीजों की रक्षा करनी चाहिए- अपनी टोपी और अपने नाम की। टोपी की रक्षा वही कर सकेगा जिसके पास टोपी के नीचे सिर है। नाम की रक्षा वही कर सकेगा जिसके दिल में आग है।"** संचेतना टोपी के नीचे सिर और दिल में आग को बचाए रखने का एक छोटा प्रयास है। उम्मीद है कि इस प्रयास को आप सभी का प्यार और सहयोग मिलेगा।

आपका ही संजीब नेगी।

कला और मानविकी परिषद की माह अप्रैल की गतिविधियां

श्रीलंका में आर्थिक संकट का एक विश्लेषण

डॉ0 हर्ष सिह

असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र

एक दे"ा का शक्ति"ाली होने का आधार उसकी प्रति व्यक्ति आय एवं जी0डी0पी0 वृद्धिदर होती है। वि"व के दे"ाों को प्रति व्यक्ति आय या आर्थिक सम्पन्न के आधार पर विकसित, विकास"ाील एवं अल्प विकसित श्रेणी में बांटा जाता है। विकसित दे"ाों जैसे फ्रांस, अमेरीका, जापान आदि की प्रति व्यक्ति आय बहुत अधिक है, जबकि विकास"ाील दे"ाों जैसे भारत, चीन, बांग्लादे"ा, ब्राजील आदि प्रति व्यक्ति आय विकसित दे"ाों की अपेक्षा कम है। वि"व में आर्थिक रूप से पिछड़े दे"ा उच्च आर्थिक विकास दर को प्राप्त करने के लिए संघर्षरत है, ताकि विभिन्न आर्थिक समस्याओं जैसे भुखमरी, बेरोजगारी, आर्थिक असमानता आदि से निजात मिल सके। इन दे"ाों के सामने सबसे बढ़ी चुनौती पर्यावरण संरक्षण के साथ उच्च आर्थिक विकास दर प्राप्त हासिल करना है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि पिछले 100 वर्षो में अनेक आर्थिक संकट पैदा हुए। 1929 की वि"वव्यापी मंदी हो, 2008 का वित्तीय संकट अथवा 2019 में कोविड–19 के कारण उत्पन्न आर्थिक संकट इन सभी आर्थिक एवं गैर आर्थिक घटनाओं ने वि"व अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया। कोविड–19 ये प्रभावित विभिन्न दे"ाों की अर्थव्यवस्थायें जहां एक ओर इस आर्थिक संकट से उभरने की ओर अग्रसर है, वही दूसरी और हमारा पड़ोसी दे"ा एक बड़े राजीतिक एवं आर्थिक संकट के दलदल में फसा हुआ है। श्रीलंका की आबादी 2.19 करोड़ एवं प्रति व्यक्ति आय 3682.04 अमेरिकी डॉलर है। 2020–21 में श्रीलंका की अर्थ व्यवस्था में सेवा क्षेत्र का 58.2 प्रति"ात, औद्योगिक क्षेत्र का 27.4 प्रति"ात एवं कृषि क्षेत्र का 7.4 प्रति"ात योगदान था। कोविड–19 के बाद बन्द पड़ी आर्थिक गतिविधियों एवं गलत आर्थिक नीतियों जैसे कर की दरों में कटौती परिणामस्वरूप राजस्व में भारी कमी एवं राजकोषीय घाटे में वृद्धि, आयतों में वृद्धि के परिणामस्वरूप विदे"ाी विनियमय की कमी, और्गनिक

खेती को बढ़ावा देने के फलस्वरूप खाद्यानों की भारी कमी तथा मांग एवं आपूर्ति में असन्तुलन के कारण उत्पन्न मुद्रास्फीति ने वहां की अर्थ व्यवस्था को आर्थिक संकट के जाल में धकेल दिया। इस आर्थिक संकट से उभरने के लिए श्रीलंका को एक बढ़े आर्थिक पैकेज की आव"यकता है, लेकिन इस आर्थिक संकट से उभरने के लिए श्रीलंका को सर्वप्रथम राजनैतिक स्थिरता को बहाल करना होगा।

NATIONAL EDUCATION POLICY, 2020

Dr. Nishant Bhatt
Assistant Professor, English

The main features of new education policy can be understood by four things.

First, is to ensure universal acess at levels of school education. Second, is to give early education with new curricular and pedagogical structure. Third, is to attain foundational literacy and numeracy. Fourth, is to make reforms in school curricula and pedagogy. Fifth, is multilingualism and the power of language.

The first point strongly emphasizes to be at all levels from pre school to secondary. Open learning for 3rd,5th and 8th grade respectively will be conducted through NIOS and state open schools,secondary education programs equivalent to grades 10th and 12th, vocational courses and other programs are proposed for achieving this target.

The second point lays emphasis on early education, 10+12 structure of school curriculum is to be replaced by 5+3+3+4 curricular structure corresponding to ages 3-8, 8-11, 11-14 and 14-18.

The third point warrants attainment of universal foundational literacy and numeracy in all primary schools for all learners grade by 3 by 2025.

The fourth point aims for holistic development of learners by equipping them with the key 21st century skills, reduction in curricular content to enhance essential learning and critical thinking, and greater focus on experimental learning.

The fifth point emphasizes on local language/regional language/mother tongue as the medium of instruction at least till grade 5, but preferably till grade 8 and beyond. Sanskrit is to be offered at all levels of school and higher education as an option for students, including the three langauge formula. Other classical languages and literatures of India are also to be available as options.

YouTube Creators: From Gig Economy To Employment.

Vaibhav Singh Rawat
Assistant Professor, Economics

Circa 2005,

"Alright, so here we are in front of the, uh, elephants, and the cool thing about these guys is that, is that they have really, really, really long, um, trunks, and that's, that's cool, and that's pretty much all there is to say".

Aforementioned is the transcript of the first video uploaded on the YouTube titled, *"Me at the zoo"*, by its co-founder Jawad Karim. A website made for video sharing has become such a financial behemoth since it's acquisition by Google in 2006. Though no one can question it's contribution in the lexicon of cultural zeitgeist but what's surprising is the strides it has made in being a legitimate player for employment generation in the world economy.

This can be particularly deduced from the recent Oxford Economics study titled, *"A Platform for Indian Opportunity: Assessing the Economic, Societal and Cultural Impact of YouTube in* India". The study utilized 3 anonymized surveys with respondents comprising of 4032 of India based users,1203 creators and 1020 business. The data collected then captured the impact of YouTube ecosystem in particular it's contribution to employment and GDP of India.

Alongside it gives a new nomenclature of *"creative entrepreneurs"* to the creators that meet at least one of the following criteria, i) Earn income directly from YouTube and/or wider income helped by their YouTube presence, ii) Permanently hire paid employees to work on their channel, iii) Have more than 10,000 subscribers to their largest channel.

The study showed that the YouTube creative ecosystem contributed INR 6,800 Cr to the Indian economy in 2020 and supported 6,83,900 fulltime equivalent jobs.

The YouTube creative ecosystem's total economic impact can further be subdivided into **direct**, **indirect**, **induced**, and **catalytic impacts**.

Wherein **direct economic impact** of the YouTube's ecosystem in India refers to the profits and earnings of

the creators which nothing but the revenue the platform redistributes to its creators, which can include ad sales, payouts from eight alternative monetization features such as channel memberships and Super Chat, and royalty payments paid to music and media companies.

The **indirect economic** impact of the YouTube's ecosystem in India entails the money spent on goods and services by the creators for producing new content for YouTube which creates a supply chain of its own.

When creators and other employees of YouTube's creative ecosystem, or its supply chain (including video editors, graphic designers, producers etc.), go on to spend their earnings. This activity creates a further **induced economic impact** in the economy.

In addition, the revenues that YouTube creators earn from other sources that are stimulated by their YouTube presence. This includes increased product sales, brand partnerships, or live performance engagements. Like Ganesh Gopal Pie whose YouTube channel Don't Memorise has more than 23 lakhs subscribers, the visibility he got from YouTube helped him license his content to various EdTech companies (Vedantu, Oxford University Press etc.) in India, while ad revenue and the YouTube Learning Fund helped him create even more content for his students, his presence on YouTube also helped him sell affordable micro-courses through DontMemorise.com. These "off-platform" revenues create a **catalytic impact** on the economy, stimulating additional indirect and induced impacts through supply chain activity and wage expenditure.

Thus the growing YouTube community is generating a huge amount of economic value in India, not just for creators but also for businesses, employees, and consumers across the country.

पर्यावरण प्रभाव आकलन

विकास बहुगुणा

एम0ए0 II सेमेस्टर

देश में विकास करने के लिए भारत सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में कई नई याजनाओं की शुरूआत की, जिसके कारण पर्यावरण अधिक मात्रा में प्रदूषित होने लगा। पर्यावरण की होने वाली हानियों को देखते हुए सरकार तथा आम जनता विकास की परियोजनाओं के प्रभाव को लेकर चिंता जताने लगी। विकास परियोजनाओं के कारण पर्यावरण की होने वाली हानियों का आंकलन करने के लिए पर्यावरण प्रभाव आकलन (EIA) का गठन किया गया।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण (UNEP) के अनुसार 'पर्यावरण प्रभाव आकलन' को निर्णय लेने से पूर्व किसी परियोजना के पर्यावरणीय सामाजिक और आर्थिक प्रभावों की पहचाान करने हेतु उपयोग किए जाने वाले उपकरण के रूप में परिभाषित किया जाता है।

पर्यावरण प्रभाव आकलन को प्रमुख रूप से एक महत्वपूर्ण विनिमय कहा जाता है, जिसके माध्यम से पर्यावरण पर विभिन्न परियोजनाओं, भूमि उपयोग, वन संरक्षण और जल प्रदूषण आदि के प्रभावों का पूर्ण रूप से अध्ययन किया जाता है। जो कि विकास परियोजनाओं पर निर्णय लेने में एक विकल्प के तौर पर कार्य करता है। वहीं पर्यावरण प्रभाव आकलन अब 30 वर्गों में परियोजनाओं के लिए आवश्यक कर दिया गया है।

इन्हें पर्यावरणीय मंजूरी तभी प्रदान की जाती है जब वे EIA के शर्तों को पूरा करते हैं। इन्हें यह मंजूरी पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रदान की जाती है। भारत सरकार द्वारा मंजूरी प्राप्त करने वाली प्रमुख परियोजनाओं में उद्योग, खनन, थर्मल पावर प्लांट, नदी घाटी परियोजना (हाइड्रो पावर प्लांट) न्यूक्लियर पावर परियोजनाएं आदि आती हैं।

पर्यावरण प्रभाव आकलन का लक्ष्य परियोजना नियोजन और डिजाइन के प्रारंभिक चरण में पर्यावरणीय प्रभावों की भविष्यवाणी करना, प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के तरीके और साधन खोजना, परियोजनाओं को स्थानीय पर्यावरण के अनुरूप आकार देना और निर्णय निर्माताओं के लिए विकल्प प्रस्तुत करना है।

भारत में पर्यावरण प्रभाव आकलन की आवश्यकता सर्वप्रथ 1976–77 में तब महसूस की गई, जब योजना आयोग (वर्तमान नीती आयोग) ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की नदी घाटी परियोजनाओं की पर्यावरणीय दृष्टि से जांच करने को कहा। पहली पर्यावरणी प्रभाव आकलन अधिसूचना वर्ष 1994 में तत्कालीन पर्यावरण एवं वन मंत्रालय (वर्तमान पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय) द्वारा स्थापित की गई थी। इस अधिसूचना के माध्यम से किसी भी निर्माण गतिविधि के विस्तार या आधुनिकीकरण या अधिसूचना की अनुसूची 1 में सूचीबद्ध की नई परियोजना की स्थापना के लिए पर्यावरण मंजूरी को अनिवार्य बना दिया गया।

वर्ष 2006 में इन कानूनों में कुछ सुधार किए गए, जिसके पश्चात पर्यावरण प्रभाव आकलन के बाद ही किसी परियोजना के निर्माण को हरी झंडी देने की व्यवस्था की गई, जो आज तक लागू है। वर्तमान प्रक्रिया के अनुसार नया प्रोजेक्ट लगाने या किसी परियोजना के विस्तार हेतु पहले पर्यावारण स्वीकृति लेनी आवश्यक है। परन्तु वर्ष 2020 में लाए गए पर्यावरण प्रभाव आकलन मसौदा (2020) की कमियों की ओर इंगित करते हुए पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य करने वाले कुछ गैर सरकारी संगठनों और पर्यावरणविदों ने यह आरोप लगाया है कि सरकार के द्वारा लाया गया यह मसौदा पर्यावरण प्रभाव आकलन के मूल प्रावधानों को कमजोर करता है, जो पर्यावरण को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। क्योंकि EIA अधिसूचना 2020 ऐसी परियोजनाओं के प्रवेश को भी सक्षम बनाती है जिनको कभी क्लीयरेंस मिला ही नहीं और उनके द्वारा लापरवाह तरीके से निर्माण कार्य भी किए गए हैं। इसके अतिरिक्त उल्लंघनों के लिए जुर्माना बहुत ही मामूली कर दिया गया है।

फ्राईडे फॉर फ्यूचर इंडिया (FFF) भारत में पर्यावरण संरक्षण हेतु एक जन आंदोलन (अथवा संस्था) है। इस संस्था ने हाल ही में भारत सरकार द्वारा जारी नए EIA 2020 मसौदे को लेकर अपनी चिंताएं जाहिर की है, इसके लिए इस संस्था ने कई पर्यावरण आंदोलन भी किए हैं। कोविड–19 महामारी के दौरान भारत सरकार ने पर्यावरण प्रभाव आकलन 2020 के मसौदे को सार्वजनिक किया है ताकि जनता की राय इस पर जानी जा सके और उनके सुझावों को पर्यावरणविदों के द्वारा रेखांकित की गई चिंताओं पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

Tally: A Gateway To The Accounting Principles

Shivanshi, BA IInd year

Every business organization in order to determine its annual financial report, needs certain accounting principles to ascertain net and gross profits during the year. Without these principles no organization can run its functions effectively. Accounting principles are the language of business. It records business transactions with a view to prepare final statements, hence helping owners and creditors in making economic decisions.

The main functions of accounting are, keeping systematic records of financial transactions, protecting properties of the business communicating results of the statements to the interested parties like, proprietors, investors, creditors, employees, government officials etc. The process of accounting is followed by first recording financial transactions into the journal, then from the journal entries a particular and individual accounts are opened in the ledger books, then trial balances are made and finally trading and, profit and loss accounts are made with the balance sheet of the year. This whole accounting process is known as accounting cycle, which is repeated in each subsequent year. The principles of accounting are classified into two categories, accounting concepts and accounting conventions.

Accounting concepts are related to business entity money measurement cost and time, whereas accounting conventions are related to financial statements disclosure and conservation of financial statements. To have a basic knowledge of general accounting "Tally" is helpful. Tally is the most powerful integrated accounting. It is the practical way of performing and making various accounting books of a business entity. Tally is usually done either on Windows or DOS prompt, after its installation the tally screen has three areas, the actual work area (consisting menus, masters and reports),the direct command area (to give commands) and, the keys (to perform functions).

For the gateway of tally to work, first a company is selected and then various functions are performed such as, creating accounts, entering vouchers, viewing and printing reports under primary choices such as, accounts information, inventory, voucher entry, balance sheet, stock statement and display. Under accounts information various accounts groups are made then ledgers are made, the cost categories are determined. Under inventory information, entry is done with viewing reports.

Nowadays, many organizations have adopted simple Tally software to deal with their accounts. It is simple and easy to use, operates with speed, non time-consuming and cost-effective, and it is widely used for monetary control, invoicing, reporting and sales management.

Word of the Month

यह न्यूज लेटर पूरी तरह अव्यवसायिक है तथा इसका प्रकाशन मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद के सदस्यों द्वारा छात्र हित में किया गया है।

संचेतना

विवेक युक्त आस्था, आस्था सहित विवेक

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद

HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE COUNCIL

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल

मासिक ई न्यूजलैटर

अंक VI,मई 2022

संपादकीय

प्रिय पाठकों, छात्रों !

संचेतना का छठा अंक आपके सामने है। आज की बाजारवादी अर्थव्यवस्था के इंस्टेंट युग में विचार, कल्पना, अभिव्यक्ति और हमारे बोध का स्वरूप भी बहुत कुछ रेडीमेड हो गया है यहां तक कि अपने नितांत निजी संबंधों में भी हम उधार की छिछली और सतही अभिव्यक्तियों से काम चलाते हैं। ऐसे में संचेतना का मुख्य उद्देश्य अपने छात्र छात्राओं में अभिव्यक्ति कौशल का विकास करने के साथ ही उन्हें अपने आसपास के मुद्दों पर स्वतंत्र चिंतन के लिए प्रेरित करना है। इस संदर्भ में संचेतना का कार्य भले ही छोटा हो लेकिन महत्वपूर्ण है। इसी अंक में बीए द्वितीय वर्ष के छात्र प्रियांशु सजवान का आलेख शिक्षा व्यवस्था में परीक्षाओं की भूमिका पर नए सिरे से विचार की आवश्यकता को रेखांकित करता है। शिवांशु उनियाल ने अर्थशास्त्र विषय की प्रासंगिकता और महत्व को अपने आलेख में बताया है। डॉ. श्रद्धा सिंह ने अपने लेख में आज के जीवन में पैदा बोर्डम, उब, बेचैनी और निरर्थकताबोध से मुक्ति के उपाय सुझाती हैं। इस अंक से हम एक नया कॉलम 'इस महीने का शब्द' शुरू कर रहे हैं जिसमें ज्ञान के अलग-अलग अनुशासनों से प्रत्येक माह एक नया पारिभाषिक शब्द देंगे जिससे पाठक लाभान्वित होंगे। आशा है आप अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों से हमें अवगत कराएंगे ताकि हम संचेतना को और बेहतर बना सकें।

मैं हवाओं का रुख तो नहीं बदल सकता,
पर मैं अपनी रहगुजर तो बदल सकता हूं।

शुभकामनाओं सहित संजीब नेगी।

Sixth Monthly Lecture by Dr Nishant Bhatt on Topic- **English: Today and Tomorrow**

कला और मानविकी परिषद की माह अप्रैल की गतिविधियां

डॉ0 निशांत भट्ट विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग द्वारा 'आधुनिक अंग्रेजीः वर्तमान एवं भविष्य' विषय पर व्याख्यान दिया गया। उन्होंने अंग्रेजी भाषा के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि अंग्रेजी भाषा 1700 शताब्दी की भाषा है तथा यह भाषा औद्योगिक क्रांति से उत्पन्न हुई भाषा है और तकनीकी विकास से अंग्रेजी के शब्दों की समाज में आवश्यकता पडी।

उन्होंने अंग्रेजी भाषा की विशेषताओं पर चर्चा करते हुए बताया कि अंग्रेजी भाषा एक सरल, लचीली एवं स्पष्ट भाषा है।साथ ही उन्होंने अंग्रेजी भाषा की विशेषताओं पर चर्चा करने के साथ–साथ बताया कि अंग्रेजी भाषा 360 मीलियन लोगों में पूरे विश्व में बोली जाती है और 118 देशों में पढाई जाती है एवं यह भाषा विचारों का आदान–प्रदान करने के लिए पूरे विश्व में बोली जाती है।

अंग्रेजी भाषा के दायरों को बताते हुए उन्होंने भाषा को विज्ञान, गणित, तकनीकी एवं पर्यटन की भाषा बताते हुए अंग्रेजी भाषा के महत्व पर चर्चा की और बताया कि अंग्रेजी एक वैश्विक एवं इंटरनेट की भाषा है।

जीवन के प्रति बच्चों जैसा उत्साह बनाए रखना जरूरी है

डॉ0 श्रद्धा सिंह, समाजशास्त्र विभाग

अक्सर देखा जाता है कि बच्चों में हर चीज के प्रति अत्यधिक उत्साह होता है। सूबह उठने से लेकर रात को सोने तक वे हमेशा ऊर्जा से भरे रहते हैं। उनमें एक –दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा का भाव भले हो, किंतु वे अपने दिल के भीतर नफरत सींचकर नहीं रखते । वे कुछ भी नया जानने के लिए आतुर रहते हैं। उन्हें न तो अनदेखे भविष्य की चिंता होती है और न ही वे अपनी आत्मा पर बीते हुए कल का बोझ ढोना पसंद करते हैं। पर, हमारे जीवन का दूसरा पहलू यह है कि जैसे–जैसे हम बडे और परिपक्व होते हैं। वैसे–वैसे इस उत्साह, मस्ती और जिंदादिली से वंचित होते जाते हैं। स्कूल–कॉलेज की शिक्षा पूरी करने के बाद जब जीवन के वास्तविक संघर्षों से दो– चार होना पडता है तो जीवन के प्रति उत्साह में अचानक कमी महसूस होने लगती है।

कई समाजशास्त्रियों, दार्शनिकों और सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने अपने–अपने तरीके से इस उत्साहहीनता की व्याख्या की है और इससे मुक्त होने के उपाय भी बताए हैं। वस्तुतः उन विद्वानों ने इस समस्या को 'अलगाव' (अर्थात लगाव न होना) का नाम दिया है जो अंग्रेजी शब्द (alienation) का हिंदी समतुल्य है। कार्ल मार्क्स जैसे समाजशास्त्री ने इसकी व्याख्या अर्थव्यवस्था के आधार पर की है तो ऐरिक फ्रॉम जैसे मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्ति के 'मन के स्तर' पर। मैक्स वेबर ने इसकी व्याख्या समाजशास्त्रीय

तथा प्रशासनिक दृष्टिकोण से की है, तो हीगेल,कीर्केगार्द और सार्त्र जैसे विचारक इस समस्या को दर्शन की सूक्ष्मताओं के स्तर पर विश्लेषण करते हैं। मैं कोशिश करूँगी कि इन सभी बातों को समाहित करते हुए सरल भाषा में जीवन कों बेहतर बनाने के लिए उपयोगी सूत्र एकत्रित करूं।

पहला सूत्र यह है कि जीवन में रचनात्मकता या 'क्रियेटिविटी' की कुछ न कुछ संभावना बनी रहनी चाहिऐ। इस बिंदु पर विशेष रूप से कार्ल मार्क्स और मैक्स वेबर ने बल दिया है। मार्क्स ने कहा है कि मनुष्य तभी तक मनुष्य रहता है जब तक वह अपनी छठी इंद्रिय (sixth sense) का प्रयोग करता रहता है। मार्क्स के दर्शन में छठी इंद्रिय शब्द का प्रयोग रचनात्मक क्षमता के अर्थ में किया गया है। उन्होंनें बताया है कि जब तक कोई व्यक्ति किसी भी तरह के रचनात्मक कार्य से जुडा रहता है, उसमें सार्थकता का अहसास बना रहता है । इस सार्थकता को बनाए रखने का एक ही तरीका है कि हमे अपने जीवन का समय रचनात्मक कार्यों में गुजारना चाहिए।

दूसरा सूत्र यह है कि जीवन में कोई न कोई उद्देश्य विद्यमान होना चाहिए। यह जरूरी नहीं है कि उद्देश्य बहुत बडा हो। जरूरी सिर्फ इतना है कि जीवन में उद्देश्य विद्यमान होना चाहिए।किसी विद्यार्थी के लिए परीक्षा में सफल होना उद्देश्य हो सकता है तो किसी नेता के लिए चुनाव जीतना। किसी का उद्देश्य धार्मिक क्रियाकलाप हो सकता है तो किसी कर्मचारी के लिए आय– वृद्धि तथा पदोन्नति हासिल करना उद्देश्य हो सकता है।

तीसरा सूत्र यह है कि व्यक्ति को किसी–न–किसी सामाजिक कार्य से जुडे रहना चाहिए। इस सूत्र की प्रभावशाली व्याख्या प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक ऐरिक फ्रॉम ने कार्ल मार्क्स के वैचारिक सूत्रों के आधार पर की है। मार्क्स ने कहा था कि व्यक्ति को गहरा संतोष तभी मिलता है जब उसे महसूस होता है कि उसने अपने समाज के लिए कोई योगदान दिया है। फ्रॉम ने अमीर लोगों को सलाह दी है कि अगर वे वास्तविक संतोष हासिल करना चाहते है तो अपने समय और धन का कुछ हिस्सा उन लोगों पर खर्च करें जो आर्थिक प्रतिस्पर्धा में पीछे छूट गए हैं और गंभीर रूप से वंचित हैं। ऐसा करने से उन वंचित व्यक्तियों की तो जो मदद होगी, सो होगी, उससे अधिक मदद उन अमीरों की होगी जो अत्यधिक धन कमाने के बावजूद अपनी सार्थकता की अनुभूति के लिए कोई वजह तलाश पाते हैं।

एक शिक्षक विद्यारूपी धन ही अपने छात्रों को देता है चाहे प्राचीन गुरूकुल की व्यवस्था हो या आज की आधुनिक प्रणाली विद्यारूपी धन को देने पर एक शिक्षक, आचार्य को परम संतोष एवं उत्साह की अनुभूति होती है। इसलिए वेदशास्त्रों में भी कहा गया है विद्या को संचय नहीं बाँटना चाहिएः–

न भ्रातृभाज्यं न च भारकारी।
व्यये कृते वर्धते एवं नित्यं, विद्याधनं सर्वधन प्रधानम्।।

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं बिद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धि मायाति क्षयमयाति स!।।

वास्तव में ये खजाना सचमुच अदभुत है, जो खर्च करने से बढता है, और जमा करने से कम होता है। जीवन में उत्साह बनाए रखने के कुछ और भी सूत्र है। पहला यह है कि उम्र चाहे जितनी भी हो जाए, व्यक्ति को अपने भीतर के बच्चे को मरने नहीं देना चाहिए। अपने भीतर के बच्चे को जिंदा रखने का अर्थ सिर्फ इतना है कि संकोच और झिझक को खुद पर हावी नहीं होने देना चाहिए। इसी में दूसरा सूत्र यह है कि अपनी व्यस्त से व्यस्त दिनचर्या में भी कुछ समय अच्छे दोस्तों और रूचियों के लिए जरूर निकालिये।

वास्तव में उत्साह से भरा जीवन एक ऐसा वरदान है जिसका महत्व उन्हें ही समझ आता है जो इस वरदान से वंचित हो गए हैं।

ब्रेल लिपि अथवा ब्रेल पद्धति

डॉ मीरा कुमारी, हिन्दी विभाग

ब्रेल पद्धति एक तरह की लिपि है, जिसको विश्व भर में नेत्रहीनों को पढ़ने और लिखने के लिए व्यवहार में लाया जाता है। इस पद्धति का आविष्कार 1821 में एक नेत्रहीन फ्रांसीसी लेखक लुई ब्रेल ने किया था। यह अलग–अलग अक्षरों, संख्याओं और विराम चिह्नों को दर्शातें हैं। ब्रेल के नेत्रहीन होने पर उनके पिता ने उन्हें पेरिस के रॉयल नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड चिल्ड्रेन में भर्ती करवा दिया। उस स्कूल में 'वेलन्टीन होउ' द्वारा बनाई गई लिपि से पढ़ाई होती थी, पर यह लिपि अधूरी थी। इस विद्यालय में एक बार फ्रांस की सेना के एक अधिकारी कैप्टन चार्ल्स बार्बियर एक प्रशिक्षण के लिए आये और उन्होनें सैनिकों द्वारा अंधेरे में पढ़ी जाने वाली 'नाइट राइटिंग' या 'सोनोग्राफी' लिपि के बारे में व्याख्यान दिया। यह लिपि कागज पर अक्षरों को उभारकर बनायी जाती थी और उसमें 12 बिन्दुओं को 6–6 की दो पंक्तियों में रखा जाता था, पर इसमें विराम चिह्न, संख्या, गणितीय चिह्न आदि नहीं होते थे। 'ब्रेल' को वहीं से यह विचार आया। लुई ने इसी लिपि पर आधारित किन्तु 12 के स्थान पर 6 बिन्दुओं के उपयोग से 64 अक्षर और चिह्न वाली लिपि बनाई। उसमें न केवल विराम चिह्न बल्कि गणितीय चिह्न और संगीत के नोटेशन भी लिखे जा सकते थे। यही लिपि आज सर्वमान्य है। लुई ने जब यह लिपि बनाई तब वे मात्र 14 वर्ष के थे। सन् 1824 में पूर्ण हुई यह लिपि दुनिया के लगभग सभी देशों में उपयोग में लायी जाती है। इसमें प्रत्येक आयताकार सेल में 6 बिन्दु यानि डॉटस होते है, जो थोड़े–थोड़े उभरे होते हैं। यह दो पंक्तियों में बनी होती है। इस आकार में अलग–अलग 64 अक्षरों को बनाया जा सकता है। सेल की बायीं पंक्ति में ऊपर से नीचे 1,2,3 बने होते हैं, इसी तरह दांई ओर 4,5,6 बने होते है। एक डॉट की औसतन ऊंचाई 0.02 इंच होती है। इसको पढ़ने की विशेष तकनीक होती है। ब्रेल लिपि को पढ़ने के लिए अंधे बच्चों में उतना ज्ञान होना आवश्यक है कि वे अपनी उंगली को विभिन्न दिशाओं में सेल पर घुमा सकें।

वैसे विश्व भर में इसको पढ़ने का कोई मानक तरीका निश्चित नहीं। ब्रेल लिपि को स्लेट पर भी प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अलावा इसे ब्रेल टाइपराइटर पर भी प्रस्तुत किया जा सकता है। आधुनिक ब्रेल स्क्रिप्ट को 8 डॉटस के सेल में विकसित कर दिया गया है, ताकि अंधे लोगों को अधिक से अधिक शब्दों को पढ़ने की सुविधा उपलब्ध हो सके। 8 डॉट्स वाले ब्रेल लिपि सेल में अब 64 के बजाय 256 अक्षर, संख्या और विराम चिह्न के पढ़ सकने की सुविधा उपलब्ध हैं। ब्रेल पद्धति को

वर्णमाला के वर्णो को कूटरूप में निरूपित करने वाली सबसे प्रथम प्रचलित प्रणाली कह सकते हैं, किन्तु ब्रेल लिपि नेत्रहीनों के पढ़ने और लिख सकने के उपाय का प्रथम प्रयास अध्याय नहीं है। इससे पहले भी 17वीं शताब्दी में इटली के जेसूट फ्रांसिस्को 'लाना' ने नेत्रहीनों के लिखने पढ़ने को लेकर काफी कोशिशे की थी।

Significance of Studying Economics

Shivanshi Uniyal, B.A. II

For over a century Economics as a subject has great significance. Economics is derived from the Greek words “Oikos” and “Nomos” which means "a house" and "to manage" respectively. The Greek applied this term to the city state which they called “Polis”. Aristotle described economics as "household management". It gives us knowledge about how industries, businesses and government work for the interest of public and how fluctuations in prices of goods and income of the consumer affect the market forces.

Besides this, the subject tells us that to become a rational man in society, it is necessary to make arrangements for food, shelter and clothes and to make choices under conditions of scarcity of resources. For this it is essential to generate income and to meet expenses. Our activities to generate income are termed as economic activities, wherein lies the origin and development of Economics as a subject matter.

Adam Smith, father of Modern Economics defined Economics as “Science of Wealth”. Economics has a great dependency on mathematics and statistics in its pursuit of finding answers of social problems so as to increase welfare of the people. For example, the development of Human Development Index which is a tool for mapping social and economic problems and educational development of the country.

Another eminent personality who tried to define economics is Alfred Marshall who said "economics is the study of mankind in the ordinary business of life and to examine that part of individual and social action which is mostly closely connected with the attainment and with the use of material requisites of well-being.” Thus economics also tells that how human satisfies his unlimited wants with limited resources which have alternative uses and out of these alternative uses of scarce resources the society has to make choices. This problem of scarcity and choices forms the core of Economics.

Whereas, according to professor Robbins Economics is “a science which studies human behavior as relationship between ends and scarce means which have alternative uses.” Therefore, studying economics is useful to understand the corporate world, markets, social problems, environmental activities, legal and political activities, decision making and allocation of resources.

Why Examinations Fail Our Students ?

Priyanshu Singh Sajwan, B.A. II

Our education system is turning us into mental slaves and the proof is our EXAMS! From students to teachers we all are frustrated with exams (FRUSTRATED!), but why?, what is that one fault in our education system that needs to be taken care of as soon as possible? If we want our students to become better learners what do we need to do? (Let us understand why exams fail our youth). We're going to implement a New Education Policy soon. Our ideas need to reach the decision makers.

(PROBLEM NO.1-NO CONCEPTUAL LEARNING)

What's wrong with exams? This is because exams do not focus on conceptual learning. There is a line in the film - 3 Idiots (chabuk ke dar sea sher bhe kursi par baithna sikh he jata hai lekin hum us sher ko well trained kahate hai 'well educated' nahi).When we all heard this line we clapped loudly for sure. But 13 years have passed since the release of the movie. Did we change the structure of our exams? No….Not at all. People often argue, what other option do we have? Are there any better options to evaluate our children? The answer is this…. it is called Bloom's Taxonomy which divides our learning process into 6 different stages. We begin by reading and understanding things, the focus is on understanding and on application of learning. Then application of knowledge is analyzed. The result is evaluated and the learning process is concluded with creativity. For example: Newton's laws of motion. Instead of learning this in a closed classroom we can learn this concept in a ground. We are taught this repeatedly that whatever our textbooks say is the absolute truth but if what is written in the textbook is the truth then why are our textbooks becoming outdated. Why don't we update the method of learning?

(PROBLEM NO.2-EXAM FIRST MINDSET)

What's wrong with exams? Because after we write the exams we forget everything that we have learned. We give so much importance to marks scored in exams that some students end up cheating. 64% of the students globally have candidly admitted that they have cheated some times in exam. The remaining 36% are LYING!!! Think about it!! The marks that you can achieve by cheating….are those marks really that genuine? You can cheat in exam! But you can't cheat life! The students who use dishonest methods to pass in exams end up failing somewhere in life because their focus is on certificate. (REMEMBER YOU CAN LIE ON

YOUR CV BUT YOU CANNOT LIE AT WORK) The marks you scored in your exams can only take you to the interview stage but whether you will be given a job or not and whether you will progress in your job…. depends on your skills and you can learn many useful skills from online learning portals like UNACADEMY. UNACADEMY is one of the most trusted app for learning and for expanding your knowledge. Unacademy is an online platform that makes both learning and teaching easy with its educational videos and lecture. It was founded in the year 2010 with videos uploaded on YouTube, but it officially got launched in the year 2015. You can give your creativity a chance to breathe freely here and can learn at your own pace. There is a lot of information available online but this information is not organized properly. I get value in small chunks on Unacademy and that is why i love Unacademy.

(PROBLEM NO. 3-WE ALL ARE DIFFERENT)

Rahul Dravid is one of my favorite cricketer. In an interview, he said "exams are not the only way to judge boy and girls". Why did he say that? All student are not same, some students learn by experiencing things, some learn by observing others, some students study while listening to music.. just think about it. Does our education system give an equal opportunity to all these different type of students? Or does it give a preference to students who are good at memorizing things. The fact is, all of us come from different backgrounds but only one type of learner gets an advantage in exams.

(PROBLEM No.4-THE RAT RACE)

What's wrong with exams? Though exams prepare us for competition, it isn't a healthy one. I am talking about comparison based competition. When my father was a student, getting 90% was a big deal because 90% was a tough job and very few students got 90% marks and above. But now, getting 90% seems like no big deal. WHY? Because we never see the number of people behind us… we only see how many people are ahead of us. This attitude keeps us unhappy life-long because we can't tolerate other getting better marks than us. Rather than crying about my marks, my family was more concerned about my best friend's marks. This never improved my marks but it ended up spoiling my friendship for sure.

Indian Economy: A Story of Growth

Arti, MA 1st Sem

India is a middle income developing market economy. It is the world's fifth largest economy by nominal GDP and the third largest by purchasing power parity (PPP).Since independence in 1947 until 1991, successive governments promoted protectionist policies, with extensive state intervention and economic regulation. This *dirigisme* is characterized in the form of **License Raj.** The end of the Cold War and the acute balance of payments crisis in 1991 led to the adoption of a policy of broad economic liberalization of India.

At the beginning of the 21st Century annual average GDP growth rate was 6% to 7% and during the 2008 global financial crisis, the economy faced a mild slowdown. India undertook stimulus measures (both fiscal and monetary) to boost growth and generate demand. In subsequent years, economic growth revived. According to the World Bank, to achieve sustainable economic development, India must focus on public sector reform, infrastructure, agricultural and rural development, removal of land and labor regulations, financial inclusion, spur private investment on public health, spur private investment on exports, education and public health.

Starting in 2012, India entered a period of declined growth, which slowed to 5.6%. Other economic problems also became apparent: a plunging Indian rupee, a persistent high current account deficit and slow industrial growth.

Indian economic recovery started in 2013-14 when the GDP growth rate accelerated to 6.4% from the previous year's 5.5%. The acceleration continued through 2014-15 and 2015-16 with growth rates of 7.5% and 8% respectively. For the first time since 1990, India grew faster than China which registered 6.9% growth in 2015. However the growth rate subsequently decelerated to 7.1% and 6.6% in 2016-17 and 2017-18 respectively. This was partly because of the disruptive effects of government policies of 2016 and in particular of banknote demonetisation and the implementation of Goods and Services Tax.

COVID-19 affected Indian economy, from April to June 2020, India's GDP dropped by a massive 24.4%. According to the latest National Income Estimates, in the second quarter of the 2020-21 financial year, the economy contracted by a further 7.4%.The recovery in the third and fourth quarters was still weak, with GDP rising by 0.5% and 1.6% respectively. This means that the overall rate of contraction in India was (in real terms) 7.3% for the whole 2020-21 year.

Word of the Month

जी.डी.पी. (सकल घरेलू उत्पाद) – किसी देश की भौगोलिक सीमा के अन्तर्गत एक वर्ष में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को 'सकल घरेलू उत्पाद' कहते हैं।

यह न्यूज लेटर पूरी तरह अव्यवसायिक है तथा इसका प्रकाशन मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद के सदस्यों द्वारा छात्र हित में किया गया है।

संचेतना

विवेक युक्त आस्था, आस्था सहित विवेक

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद

HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE COUNCIL

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल

मासिक ई न्यूजलैटर

अंक *VII*,जून **2022**

संपादकीय

प्रिय पाठकों ! संचेतना का सातवां अंक आपके हाथों में है। पिछले अंक से हमने संचेतना को शहर के गणमान्य व्यक्तियों और बुद्धिजीवियों तक पहुंचाने का निर्णय लिया और उन तक संचेतना का अंक पहुंचाया भी। उन सब ने छात्र-छात्राओं की रचनात्मक प्रतिभा को मंच देने के लिए इस लघु प्रयास की सराहना की। यह हमारे लिए संतोष की बात है। इसी क्रम में इस अंक में महाविद्यालय की छात्रा मनिका ने प्रख्यात पर्यावरणविद श्री विजय जड़धारी जी का साक्षात्कार लिया है। छात्र-छात्राएं विभिन्न विषयों में शोध प्रविधि के बारे में पढ़ते हैं लेकिन संचेतना में वे साक्षात्कार कैसे लिया जाता है उसकी तकनीक क्या है आदि के बारे में व्यवहारिक धरातल पर सीखते हैं। उत्तराखंड में पलायन एक बड़ी समस्या के रूप में चिन्हित किया गया है। इस समस्या पर युवा क्या सोचते हैं इसको सौरव पंवार ने अपने आलेख में रेखांकित किया है। 5 जून पर्यावरण दिवस के अवसर पर देश भर में पर्यावरण जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित किए गए। हमारी परंपरा और दर्शन में मनुष्य इस विशाल ब्रह्मांड का एक हिस्सा भर है जबकि पाश्चात्य आधुनिक विज्ञान और दर्शन में मनुष्य इस प्रकृति का मालिक है। इसी पर एम. ए. संस्कृत की छात्रा शिवानी ने 'वेदों में पर्यावरण' विषय पर लेख लिखा है। **अवार भाषा के प्रसिद्ध रूसी कवि रसूल हमजातोव ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'मेरा दगिस्तान' में लिखा है - "पहाड़ी आदमी को दो चीजों की रक्षा करनी चाहिए- अपनी टोपी और अपने नाम की। टोपी की रक्षा वही कर सकेगा जिसके पास टोपी के नीचे सिर है। नाम की रक्षा वही कर सकेगा जिसके दिल में आग है।**" संचेतना टोपी के नीचे सिर और दिल में आग को बचाए रखने का एक छोटा प्रयास है। उम्मीद है कि इस प्रयास को आप सभी का प्यार और सहयोग मिलेगा।

आपका ही संजीब नेगी।

Seventh Monthly Lecture by Dr Ankita Bora on Topic- **हाशिए में पड़ा समाज : थर्ड जेंडर।**

कला और मानविकी परिषद की माह अप्रैल की गतिविधियां

डॉ अंकिता बोरा, असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी द्वारा "हाशिए में पड़ा समाज : थर्ड जेंडर, चित्रा मुद्गल के उपन्यास के विशेष संदर्भ में" विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि थर्ड जेंडर समाज से कटे हुए लोग हैं जो अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। डॉ बोरा ने बताया कि कैसे विपरीत परिस्थितियों में रहते हुए कुछ किन्नरों ने अपने व अपने समाज के लिए उत्कृष्ट कार्य किए। पद्म श्री पुरस्कार प्राप्त मंजम्मा जोगती, प्रथम किन्नर आइ ए एस ऐश्वर्या ऋतुपर्णा प्रधान समाज के लिए मिसाल हैं कि कैसे अभावों में भी अवसर खोजे जा सकते हैं। किन्नरों को प्राप्त संवैधानिक अधिकारों के विषय में बताते हुए उन्होंने कहा कि थर्ड जेंडर को मान्यता संविधान ने तो दे दी, किन्तु उन्हें अभी तक परिवार और समाज की स्वीकार्यता नहीं मिल पाई है। किन्नर समस्या को उजागर करता हुआ उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स न० 203 : नालासोपारा' के माध्यम से किन्नरों की सरदार और गुरु परंपरा की व्यवस्था को भी बताया।

महाविद्यालय की बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा मनिका ने प्रख्यात पर्यावरणविद और बीज बचाओ आंदोलन के प्रणेता श्री विजय जड़धारी जी से 5 जून पर्यावरण दिवस पर एक साक्षात्कार लिया। जो संचेतना के इस अंक में पाठकों के लिए प्रस्तुत है। श्री जड़धारी जी को इंदिरा गांधी पर्यावरण पुरस्कार 2009,गांधी शांति प्रतिष्ठान द्वारा 2007 में प्रणवानंद पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है.वर्तमान में वे उत्तराखंड जैव विविधता बोर्ड में विषय विशेषज्ञ के रूप में हैं साथ ही औद्यानिकी और वानिकी विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद और रिसर्च काउंसिल के भी सदस्य हैं साथ ही भारतीय वन अनुसंधान देहरादून की रिसर्च एडवाइजरी ग्रुप के भी सदस्य के रूप में उनके कार्यों को पहचान मिली है। अपने कार्यों को लेकर उन्होंने बांग्लादेश,नेपाल, मलेशिया, बेल्जियम,जर्मनी, दक्षिण अफ्रीका आदि कई देशों में व्याख्यान दिए हैं। उनकी पहाड़ से सम्बन्धित खेती और पारंपरिक बीज और खेती पर लगभग 8 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं और सैकड़ों शोध पत्र विभिन्न विश्वविद्यालयों, संस्थानों और किसानों के बीच प्रस्तुत किए गए हैं।

मनिका - जड़धारी जी आप का कार्यक्रम में स्वागत है,आप हमें और हमारे पाठकों के लिए बताएं कि बीज बचाओ आंदोलन क्या है और आप चिपको आंदोलन से भी जुड़े रहे तो इस पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालें।

श्री विजय जड़धारी - मैं अपनी युवावस्था में चिपको आंदोलन का कार्यकर्ता रहा हूं चिपको आंदोलन के बारे में लोग जानते हैं लेकिन जो जानते हैं वह रैणी या चमोली का चैप्टर ही जानते हैं. कम लोग जानते हैं कि टिहरी में भी चिपको आंदोलन चला और हेंवल नदी जो सुरकंडा से निकली है और शिवपुरी में गंगा में विलीन हो जाती है उसके क्षेत्र में अदवाणी, खुरेत, लासी यहां 1971 से 80 तक यह आंदोलन चला और जिससे चिपको आंदोलन को एक नई दिशा मिली। पहले जंगल की देन लीसा, लकड़ी का व्यापार और एक तरह से रोजगार था इसलिए जंगल काटे जाते थे। शुरुआत में चिपको आंदोलन व्यापार केंद्रित था कि क्यों ना हम भी जंगल काटें और इसी का उद्योग लगाएं ,उसी दौरान बहुत सारी समितियां एवं वन निगम की बना। वन निगम बना तो श्रमिक वर्गों के साथ इन्होंने भी जंगल का दोहन किया और जिसके साथ श्रमिक समूह को रोजगार देने की बात कही जाती थी। लेकिन जब पिथौरागढ़ के तवाघाट में लैंडस्लाइड आया जिसमें लगभग 40-50 लोग आईटीबीपी के जवानों संग मारे गए. तब अध्ययन के उपरांत सामने आया कि उस क्षेत्र में जब जंगल काटा गया तो पेड़ कम होने के कारण बरसात में भूस्खलन हुआ.तब हेंवल घाटी से चिपको आंदोलन को एक नई दिशा मिली कि अब लोगों को कुदरती संसाधन जैसे जंगलों को बचाना चाहिए और यहां से पर्यावरण चेतना का एक नया मंत्र निकला- 'क्या है जंगल के उपकार, मिट्टी पानी और बयार. मिट्टी पानी और बयार, जिंदा रहने के आधार।' इस नारे से लीसा लकड़ी और व्यापार पीछे छूट गया और जो जंगल की देन है मिट्टी, पानी और हवा यानी पर्यावरण इस पर महत्व दिया जाने लगा।

मनिका - बीज बचाओ आंदोलन में आपकी क्या प्रेरणा थी और सबसे बड़ी समस्या रही होगी अशिक्षित लोगों को हाइब्रिड बीजों के बजाय पारंपरिक खेती और बीजों के प्रति जागरूक करना।

श्री विजय जड़धारी - असल में समस्या अनपढ़ लोगों और किसानों की तरफ से कम आई सबसे बड़ी समस्या कृषि वैज्ञानिक, कृषि विभाग रानी चौरी में जी बी पंत विश्वविद्यालय आदि से आई। इन लोगों ने शुरुआत में जो हाइब्रिड बीज थे उनके साथ रासायनिक खाद भी फ्री देते थे। बीज भी देते थे, खाद भी देते थे और फसल में कुछ खराबी आ जाए तो कीटनाशक भी देते थे। शुरुआत में उपज दोगुना तक होने लगी लेकिन कीटनाशक, खरपतवारनाशक इनके प्रयोग से खेतों की मिट्टी नशे की आदी हो गई और मिट्टी खराब होने लगी। आदमी के लिए शराब और मिट्टी के लिए रासायनिक खाद एक तरह का नशा है। बुजुर्गों से बात करके पता चला कि पहले बीजों की बहुत सारी किस्में आसानी से उपलब्ध होती थी जब हमने बुजुर्गों से बातचीत की तो उन्होंने कहा कि जब से नए बीज आए तब से हमने पुराने बीज बोने छोड़ दिए. फिर हमने पुराने बीजों को खोजने के लिए दूर-दूर के स्थानों की यात्रा की। 80 के दशक में जब हमारे पारंपरिक बीज समाप्त हो गए थे तब भी दूरदराज के क्षेत्रों में लोगों ने अपने पारंपरिक बीज बचा कर रखे थे। हमने पूरे पहाड़ की यात्रा में लोगों से थोड़ा-थोड़ा करके एक एक मुट्ठी पारंपरिक बीज इकट्ठा कीजिए और फिर किसानों को बोने के लिए दिए।

मणिका - जो हमारे परंपरागत बीज हैं ,यह खाद्य सुरक्षा और पोषण से किस तरह जुड़े हैं इस पर थोड़ा प्रकाश डालिए।

श्री विजय जड़धारी - परंपरागत बीच खाद्य सुरक्षा और पोषण की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं. ये ऐसे होते हैं जो एकल, मोनोकल्चर नहीं है यानी इनके साथ और चीजें भी उगाई जाती हैं। जैसे कोदा के साथ हम 12 तरह की चीजें उगा सकते हैं जिसे पहाड़ में बारहनाजा कहते हैं। बारहनाजा हमारी खाद्य सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। इसमें हर प्रकार का खाना मिल जाता है जैसे पोषण की दृष्टि से मंडवा खाने से हड्डियां मजबूत होंगी,राजमा , भट्ट,गहथ, नौरंगी, सुन्टा, रगड़वांस आदि में भरपूर मात्रा में अलग-अलग पोषक तत्व होते हैं। दालों से मांस के बराबर प्रोटीन मिल जाता है तो चौलाई से कैल्शियम और प्रोटीन की पूर्ति होती है। पहाड़ में खेती और पशुपालन एक दूसरे से जुड़े हैं.पशुपालन से गोबर प्राप्त होता है जिससे धरती भी पोषित होती है। चौलाई आदि के साथ लैग्युम वाली दालें जैसे उड़द, नौरंगी भी इसके साथ लिपट जाती हैं परिणामस्वरुप यह nitrogen-fixing का काम करती हैं.इस प्रकार खाद्य सुरक्षा और पोषण भरपूर मात्रा में मिलता है.80 के दशक में जब वैज्ञानिकों ने कहा कि मंडवा, बाजरा आदि मोटे अनाजों को छोड़कर सिर्फ सोयाबीन लगाओ और जब लोगों में फ्री में बीज, खाद आदि बांटे तो लोगों ने पहले सोयाबीन लगाया । पहले साल उत्पादकता भी बढी और लोगों को उसका भाव भी मिला लेकिन अगले साल जब बहुत सारे लोगों ने सोयाबीन लगाया तो उसे बेचने की भी दिक्कत आई और अगले साल बिना कीटनाशक और खादें डालें उसका उत्पादन भी घट गया। सोयाबीन में चारा भूसा तो होता नहीं है जो पशुओं के काम आता और ना ही उसे पूरे साल भर खाया जा सकता था तो पहाड़ की महिलाओं ने हमारी आंखें खोली, उन्होंने बताया कि जो हमारा मंडवा झंगोरा होता था उसका दाना हम खा लेते थे और उसका शेष हमारे जानवर खा लेते थे. तो अगर हम सोयाबीन की खेती करते हैं तो सबसे पहले तो उसमें खरीदारों की कमी होती है और अगर बिक भी जाए तो हमारे पशुओं के लिए चारा नहीं बचता। एक पहाड़ी कहावत है कि - 'अपणा आलू बाजार बेचा अर बिराणा आलू न थोबड़ा थेचा'.यानी पहले अपने आलू बाजार में बेच दो और फिर सड़ा गला बाजार से खरीद कर अपना मुंह खराब करो। इससे हमारी आंखें खुली कि अगर खेती करनी है तो उसमें विविधता होनी चाहिए और पहाड़ की खेती में विविधता भी है और खाद्य सुरक्षा भी।

मणिका -1980 के दशक में जब आपने यह कार्य प्रारंभ किया तो लोगों द्वारा आपका मजाक और विरोध भी किया गया होगा तब आप कैसे अपने दृढ़ निश्चय से अपने कार्य के प्रति अग्रसर रहे।

श्री विजय जड़धारी - हमारा पक्का विश्वास था कि खेती के पारंपरिक बीज, अच्छी मिट्टी, बुजुर्गों का अनुभव और महिलाएं हमारे ज्ञान का भंडार हैं, यह बीज का संचय करती है और उसका उपयोग भी। पहाड़ के लोग बीज रखने में बहुत माहिर माने जाते हैं एटकिंसन के गजट में भी लिखा है कि पहाड़ का आदमी मर जाएगा लेकिन अपना बीज नहीं खाएगा। 1852 के अकाल और गोरखा आक्रमण के समय भी यह देखा गया कि लोग जहां तहां मरे हुए पाए गए लेकिन उन्होंने अपनी तोमणियों में रखे हुए बीजों को खाने के लिए प्रयोग नहीं किया। तो पहाड़ के लोग बीजों के प्रति बड़े संवेदनशील रहे हैं।

मनिका - 1980 के दशक में आपने यह अभियान शुरू किया और अब यह विचार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी स्वीकृति पा रहा है। जैसे कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2023 को इंटरनेशनल मिलेट ईयर के रूप में मनाने का प्रस्ताव रखा है और आज प्रधानमंत्री मोदी भी देश से मिट्टी बचाओ की अपील कर रहे हैं ऐसे में आपको कैसा महसूस होता है।

श्री विजय जड़धारी - अच्छा भी लगता है और आश्चर्य भी होता है जब 30 साल पहले हम यह बात कहते थे तब लोग हमारा मजाक उड़ाते थे और बाहरी समाज यानि शहरी सभ्यता में भी लोग अगर मंडवा झंगोरा आदि खाते तो छुपा कर खाते थे। पहले सरकार भी पारंपरिक अनाज का तिरस्कार कर उसे बेकार कहती थी। इन अनाजों को मोटा अनाज और गंवार लोगों का खाना कहकर तिरस्कृत किया जाता था लेकिन अब वही वैज्ञानिक कह रहे हैं कि यही अनाज उत्तम और पौष्टिक आहार हैं। भारत सरकार ने 10 मई 2018 को गजट नोटिफिकेशन निकाला जिसमें उन्होंने माना कि यह झंगोरा, मंडवा, बाजरा आदि पौष्टिक आहार है अंग्रेजी में न्यूट्रीसेरियल इन्हें कहा जा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने गुजरात में प्राकृतिक खेती को लेकर अभी एक बड़ा कार्यक्रम किया। नीति आयोग भी प्राकृतिक खेती को आगे बढ़ाने पर जोर दे रहा है। सरकार को राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर एक नीति बनाने की आवश्यकता है कि किस प्रकार इन अनाजों को बचा सके और इस तरह की खेती करने वाले लोगों को सम्मान दें,आज जो क्लाइमेट चेंज हो रहा है उसमें सूखे में अतिवृष्टि में और कुछ हद तक ओले में भी जो फसलें टिकी रह सकती हैं वह पारंपरिक फसल और बीज ही हैं। यह वह फसलें हैं जिनके लिए बहुत कम पानी की जरूरत है। इस तरह जो सतत विकास का मॉडल है उसमें भी पारंपरिक बीजों और फसलों का अपना महत्व है। अभी जापान में एक किसान मासुनोआ फोकोबे ने प्राकृतिक खेती की अवधारणा दी है। जैसे जंगल को ना हम पानी देते हैं न खाद देते हैं बल्कि प्रकृति अपना पोषण और संरक्षण स्वयं करती है। पारंपरिक बीजों की ताकत भी यही प्राकृतिक शक्ति है और पुराने लोगों को कोई बीमारी नहीं होती थी क्योंकि उनका भोजन शक्तिशाली था तो खाद्य सुरक्षा और पोषण की दृष्टि से और जलवायु परिवर्तन में यही पारंपरिक बीज और फसलें आगे काम आने वाली है।

मनिका - आज युवाओं को आप क्या संदेश देंगे कि वह अपने परंपरागत खेती और बीजों से जुड़े रहें।

श्री विजय जड़धारी - सबसे पहले अपने बुजुर्गों से बात करके जानें कि पहले का खानपान कैसा था। आज हर युवा खेती नहीं कर सकता लेकिन हर किसी के घर में गमले हैं, किचन गार्डन है तो उसी में थोड़ा बहुत कुछ उगा कर देखें। आप किसान नहीं हो सकते लेकिन आप लोगों को जागरूक कर सकते हैं कि किस प्रकार रसायन और हाइब्रिड बीज जमीन को, खेती को आपके स्वास्थ्य को और आपके पशु पक्षियों को भी नुकसान पहुंचा रहे हैं और ज्यादा से ज्यादा प्रकृति के करीब रहकर प्राकृतिक चीजों का उपयोग करें।

मनिका- जड़धारी जी आपने बीज बचाओ आंदोलन के बारे में हमारे युवा साथियों को जानकारी दी आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

पलायन एक अभिशाप

सौरभ पँवार, बी ए प्रथम वर्ष

कहा जाता है कि "पहाड़ का पानी और पहाड़ की जवानी कभी पहाड़ के काम नहीं आती।" पलायन आयोग की रिपोर्ट ने यह बात साबित भी कर दी है। पलायन आयोग की रिपोर्ट में कहा गया है कि अलग राज्य बनने के बाद उत्तराखंड से करीब 60% आबादी यानी 32 लाख लोग अपना घर छोड़ चुके हैं। पलायन आयोग की रिपोर्ट कहती है कि 2018 में उत्तराखंड के 1700 गाँव भुतहा (घोस्ट विलेज) हो चुके हैं। जबकि करीब 1000 गांव ऐसे हैं जहां 100 से कम लोग बचे हैं। कुल मिलाकर 3900 गांवों से पलायन हुआ है और पलायन ग्रामीण के लिए एक अभिशाप बन चुका है।

पौड़ी व अल्मोड़ा जनपद से सबसे अधिक पलायन हुआ है। पौड़ी में 2001 की जनगणना के अनुसार लगभग 27205 घरों पर ताले लटके हुए थे। वहीं 2011 में ये 38764 हो चुके हैं तथा उत्तराखंड के 13 जिलों में से सबसे अधिक पलायन पौड़ी से हुआ है।

उत्तराखंड से पलायन कर रहे ग्रामीण युवकों का कहना है कि **खुद से अपना घर कोई नहीं छोड़ता। रोजगार के अवसरों की कमी के चलते युवा शहरी क्षेत्रों में बेहतर सुविधाओं के लिए पलायन कर रहे हैं।**

आज के समय में पलायन करना एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है। इसके बहुत से नुकसान भी हैं और कुछ फायदे भी हैं। यदि ग्रामीण क्षेत्रों के लोग पलायन करते हैं तो जाहिर सी बात है अधिकतर लोग शहरों में शिक्षा या नौकरी करने के बारे में ही सोचते हैं तथा एक बार शहरों में जाने के बाद युवा दोबारा घर वापस आने के बारे में नहीं सोचता है। जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों की जनसंख्या दिन प्रतिदिन कम होती आ रही है।

उत्तराखंड में पलायन करने के कुछ मुख्य कारण निम्न प्रकार से हैं -

शिक्षा - आज उत्तराखंड में प्राथमिक एवं माध्यमिक और डिग्री कॉलेज की संख्या करीब 19152 होने के बावजूद शिक्षा संस्थानों पर बुनियादी सुविधाओं की कमी है, जिस कारण पहाड़ युवा मैदानी क्षेत्रों जैसे - देहरादून, दिल्ली की ओर पलायन कर रहा है, क्योंकि वहां शिक्षा की सुविधा अच्छी है। यदि हम उत्तराखंड में शिक्षा के क्षेत्र को ही लें जहां सरकार की नीति के अनुसार हर 1 किलोमीटर की दूरी पर प्राथमिक विद्यालय और हर 3 किलोमीटर की दूरी पर एक माध्यमिक विद्यालय बनाए गए हैं, परंतु इन स्कूलों में पढ़ने के लिए बच्चे ही नहीं हैं। कहीं बच्चे हैं भी तो उनकी संख्या बहुत कम है। स्कूल में पढ़ा रहे अध्यापकों ने भी अपने परिवारों को देहरादून जैसे मैदानी इलाकों में रखा है जिससे वे 21वीं सदी के बदलते जीवन व सुविधाओं का लाभ ले सकें।

ऐसा भी नहीं है कि सभी स्कूल के हालात एक जैसे हैं, बल्कि उत्तराखंड के बहुत से पहाड़ी स्कूल ऐसे भी हैं जहां सैकड़ों की संख्या में छात्र हैं तथा यह विद्यालय अध्यापकों की कमी से जूझ रहे हैं। सरकार को इन विद्यालयों में ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे वह पलायन को रोकने में सक्षम हो सके।

स्वास्थ्य सुविधा - उत्तराखंड के सरकारी अस्पताल के हालात बहुत अच्छे नहीं है। लोगों को अस्पताल तक पहुंचाने के लिए कई किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। उत्तराखंड में कई गांव ऐसे भी हैं जहां 108 एंबुलेंस सेवा को पहुंचने में 4 से 5 घंटे तक लग जाते हैं जिस कारण लोगों को अस्पताल तक पहुंचने में बहुत तकलीफ होती है। उत्तराखंड के ग्रामीण क्षेत्रों के अस्पतालों में डॉक्टरों एवं मशीनों की भी कमी है जिस कारण उत्तराखंड का युवा शहरों में पलायन करता है।

रोजगार - पलायन आयोग रिपोर्ट के अनुसार 50% लोग रोजगार के लिए पलायन करते हैं। उत्तराखंड में रोजगार के अधिक संसाधन उपलब्ध नहीं है। रोजगार के लिए यहां के अधिकतर लोग खेती पर निर्भर करते हैं लेकिन जंगली जीव जंतु उनकी खेती को नष्ट कर देते हैं। उत्तराखंड में लोग छोटे-छोटे व्यापार करते हैं जिससे उन्हें अधिक लाभ नहीं मिलता तथा उत्तराखंड की सरकार को रोजगार पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

पलायन के सकारात्मक पहलुओं को देखें तो पलायन करने से लोगों को अच्छी स्वास्थ्य सुविधा, अच्छी शिक्षा, रोजगार के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। उत्तराखंड की जीडीपी बहुत अच्छी है जिसका कारण हमारे लोग उत्तराखंड से पलायन कर दूसरे राज्य व देश - विदेश में जाते हैं और अपने परिवार के भरण पोषण के लिए पैसे भेजते हैं और स्वयं भी आते जाते रहते हैं जिससे हमारी जीडीपी को बढ़ावा मिलता है।

सरकार भी इस गंभीर समस्या को कम करने का प्रयास कर रही है और इस मुद्दे पर अध्ययन के लिए सरकार ने अगस्त 2017 में **ग्राम**

विकास एवं पलायन आयोग की स्थापना की। जिसका मुख्यालय पौड़ी में बनाया गया था। लेकिन सोचने वाली बात यह है कि पलायन आयोग ने कुछ सालों में खुद ही पलायन कर दिया और अपना मुख्यालय पौड़ी से देहरादून में शिफ्ट कर दिया।

जहां शहरों के उथल-पुथल जीवन से बाहर आने के लिए लाखों पर्यटक उत्तराखंड आते हैं। वहीं आज उत्तराखंड वासी हर साल अपने पैतृक भूमि को छोड़ शहरों की ओर चले जाते हैं। पलायन आयोग के अनुसार 70% पलायन मैदानी भागों में ही हुआ है, वहीं 29% लोगों ने अन्य राज्य में पलायन किया है जबकि 1% लोगों ने विदेश में पलायन किया है और एक मुख्य बाद पलायन आयोग की रिपोर्ट में कहा भी गया है कि पहाड़ों में नेपाल व बिहार के लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है।

पलायन को रोकने के लिए राज्य सरकार को स्थानीय समस्याओं को ध्यान में रखकर पीने के पानी, स्वास्थ्य सुविधाओं जैसी मूल भूत आवश्यकता पर ध्यान देना चाहिए। पर्यटन को बढ़ावा देने की जरूरत है, धार्मिक स्थल के यातायात साधनों पर ध्यान देना चाहिए और नई फसलों के उत्पादन के लिए किसानों को जागरूक करना चाहिए।

इसके साथ ही हम सबको उन प्राचीन कारीगरों को फिर से पुनर्जीवित करना चाहिए और कारीगरों को उचित पारिश्रमिक देना भी सुनिश्चित करना चाहिए। उनकी वस्तुओं का उपयोग अधिक से अधिक करने के लिए जागरूकता अभियान चलाना चाहिए जिससे कि कारीगरों की कला को दुनिया के समक्ष उजागर किया जा सके। ऐसा करने से गांव का पलायन रोकने में सहायता मिल सकती है और इसी के साथ उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था भी सुधरेगी।

कवि महेश चंद्र पुनेठा अपनी कविता के माध्यम से पलायन की पीड़ा को बताते हुए लिखते हैं -

"सड़क तुम अब आई हो गांव,
जब सारा गांव शहर जा चुका है।"

वेदों में पर्यावरण

शिवानी, एम ए प्रथम वर्ष

वेदों में जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि, वनस्पति, अंतरिक्ष, आकाश आदि के प्रति असीम श्रद्धा प्रकट करने पर अत्यधिक बल दिया गया है। तत्वदर्शी ऋषियों के निर्देशों के अनुसार जीवन व्यतीत करने पर पर्यावरण असंतुलन की समस्या उत्पन्न नहीं हो सकती। इनमें हुए अवांछनीय परिवर्तनों के कारण आज जल - प्रदूषण, वायु - प्रदूषण, मृदा - प्रदूषण की समस्याएं चारों ओर व्याप्त है। जल जीवन का प्रमुख तत्व है, इसलिए वेदों में अनेक संदर्भ में उसके महत्व पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक वेदों में अलग-अलग प्राकृतिक संसाधनों का वर्णन अलग-अलग वेदों में किया गया है।

ऋग्वेद में पर्यावरण का वैशिष्ट्य बताते हुए लिखा है "अप्सु अन्तः अमृतं, अप्सु भेषजम्" अर्थात जल में अमृत है, जल में औषधि गुण विद्यमान रहते हैं। अस्तु, आवश्यकता है जल की शुद्धता - स्वच्छता को बनाए रखने की। निस्संदेह, जल संतुलन से ही भूमि में अपेक्षित सरसता रहती है, पृथ्वी पर हरीतिमा छाई रहती है, वातावरण में स्वाभाविक उत्साह दिखाई पड़ता है एवं समस्त प्राणियों का जीवन सुखमय तथा आनंदमय बना रहता है। इस प्रकार जल का कार्य पर्यावरण संतुलित करने में अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है।

यजुर्वेद में कहा गया है, "मित्रस्याहम् भक्षुसा सर्वाणि भूतानि समीक्षे" अर्थात सभी प्राणियों के प्रति सहृदयता का परिचय देना ही जीवन का सही लक्षण है। आज जिसे पारिस्थितिकी तंत्र कहते हैं उसमें भी तो रचना तथा कार्य की दृष्टि से विभिन्न जीवों और वातावरण की मिली-जुली इकाई का ही स्वरूप विश्लेषण किया जाता है।

अतः इस प्रकार इन दोनों वेदों में प्रकृति के विषय में पर्यावरण के संतुलित होने के संबंध में दोनों वेदों ने अपने - अपने विचार प्रस्तुत किए।

पर्यावरण को स्वच्छ सुंदर रखने का आग्रह है सिर्फ भावनात्मक स्तर पर किया गया हो, ऐसी बात नहीं है। वैज्ञानिक अनुसंधान के संदर्भ में भी सांविक्ता की भावना से अनुप्राणित होकर गहरे मानवीय संबंध की स्थापना पर पर्याप्त बल दिया गया है। उदाहरणार्थ, ऋग्वेद में वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में भी सूर्य को पिता, पृथ्वी को माता और किरण समूह को बंधु के समान आदर देने का स्पष्ट निर्देश है। आज तो गलत प्रतिस्पर्धा के कारण विश्व पर्यावरण विषाक्त बनता जा रहा है।

वेद का स्पष्ट निर्देश है कि लोग प्रकृति के प्रति श्रद्धा पूर्ण श्रद्धा रखें और पर्यावरण को शुद्ध बनाने बनाए रखने में अपना योगदान अवश्य देते रहें। आनंदमय जीवन व्यतीत करने के निमित्त उससे पर्यावरण की अनुकूलता प्राप्त करते रहें। इस विषय में ऋग्वेद के ऋषि ने अपना अशीर्वादात्मक उद्गार दिया है। वे कहते हैं -

"पृथ्वी: पू: च भव।"

अर्थात् समग्र पृथ्वी, संपूर्ण परिवेश परिशुद्ध रहे, नदी, पर्वत, वन, उपवन ये सब स्वस्थ रहें। गांव, नगर सबको विस्तृत और उत्तम परिचय प्राप्त हो, तभी जीवन का सम्यक विकास हो सकेगा।

वेदों में पर्यावरण - संतुलन का महत्व अनेक प्रसंगों में व्यंजित है। महावेदश महर्षि यास्क ने अग्नि को पृथ्वी - स्थानीय, वायु को अंतरिक्ष स्थानीय एवं सूर्य को द्युस्थानीय देवता के रूप में महत्वता देकर संपूर्ण पर्यावरण को स्वच्छ विस्तृत तथा संतुलित रखने का भाव व्यक्त किया है।

शुक्ल - यजुर्वेद का शाश्वत संदेश है, मधुयुक्त सरस - शुद्ध पवन गतिशील रहे, सागर मधुपूर्ण वर्षण करें, रात के साथ - साथ दिन भी मधुर रहे, पृथ्वी की धूल से लेकर अंतरिक्ष तक मधु संयुक्त हो। सूर्य मधुमय रहे, गाय मधुर देने वाली हो। निखिल ब्रह्मांड मधुमय रहे। (शुक्ल यजुर्वेद 13.2729)

हमारे वैदिक ऋषि मनीषी पर्यावरण रक्षण के प्रति बहुत जागरुक एवं सावधान रहे हैं। पर्यावरण रक्षण का अभिप्राय ही स्वयं की रक्षा करना है। अतः स्वकीय रक्षा हेतु यह पर्यावरण रक्षणीय है, इसी दृष्टि से उन्होंने प्रकृति की देवतभाव से उपासना की। अतः इस प्रकार वेद - निरूपित पर्यावरण - संरक्षण, स्वस्थ एवं विकसित जीवन का अन्यतम निर्देशन है।

Word of the Month

अस्तित्ववाद)Existentialism) यह एक मनुष्य केंद्रित दर्शन है। जो व्यक्ति के अस्तित्व, आजादी और चुनाव को महत्व देता है। इस दार्शनिक विचारधारा के अनुसार मनुष्य का महत्व उसकी आत्मनिष्ठता में है। विज्ञान,तकनीक और बुद्धि वादी दार्शनिकों ने मनुष्य को एक वस्तु बना दिया है जबकि मनुष्य स्वतंत्र प्राणी है और स्वतंत्रता का अर्थ है बिना किसी बाहरी दबाव के चयन की स्वतंत्रता। सोरेन कीर्कगार्द, यास्पर्स, मार्टिन हाइडेगर, सार्त्र, कामू, काफ्का आदि अस्तित्ववादी दार्शनिक और चिंतक हैं। सार्त्र का कथन है -Existence comes before essence.यानी अस्तित्व सार से पहले है।

यह न्यूज लेटर पूरी तरह अव्यवसायिक है तथा इसका प्रकाशन मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद के सदस्यों द्वारा छात्र हित में किया गया है।

संचेतना

विवेक युक्त आस्था, आस्था सहित विवेक

मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद

HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE COUNCIL

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल

मासिक ई न्यूजलैटर

अंक *VIII*, अगस्त **2022**

संपादकीय

प्रिय पाठकों !

संचेतना का अगस्त माह का आठवां अंक आपके हाथों में है। इस अंक के लिए एम. ए. द्वितीय सेम.के छात्र विकास बहुगुणा ने पर्यावरण प्रभाव आकलन पर एक समीक्षात्मक लेख लिखा है और शिवांशी उनियाल का लेख एकाउंटिंग के सिद्धांतों के बारे में बताता है। शेष दो आलेख प्राध्यापकों के हैं। संचेतना के पीछे अवधारणा यह थी कि यह छात्रों के लिए रचनात्मक लेखन का एक ऐसा मंच बन सके जिसमें प्राध्यापकों की भूमिका कम से कम हो और छात्रों की अधिक। अगले अंक से प्रयास करेंगे कि इसमें छात्र अधिक से अधिक लिखें और प्रत्येक अंक में केवल एक आलेख किसी भी एक प्राध्यापक का हो। छात्रों की रचनात्मक और लेखन प्रतिभा को संवारने का मंच संचेतना बन सके, ऐसी हमारी कोशिश रहेगी। छात्र-छात्राओं के बीच संचेतना का क्या प्रभाव पड़ रहा है और छात्र इसमें लिखने के लिए कितने उत्साहित हैं इस संबंध में एक फीडबैक प्राप्त करने की योजना बनाया जाना भी आवश्यक है। 28 अगस्त को मशहूर शायर फिराक गोरखपुरी की जयंती है तब तक के लिए उन्हीं के शब्दों में -

इसी खंडहर में कहीं कुछ दिए हैं टूटे हुए,
इन्हीं से काम चलाओ बड़ी उदास रात है।

सभी पाठकों को स्वतंत्रता दिवस की 75 वीं वर्षगांठ पर शुभकामनाओं एवं नए शैक्षणिक सत्र के लिए नए एवं पुराने छात्र-छात्राओं का मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद द्वारा स्वागत के साथ.... शेष अगले अंक में।

संजीब सिंह नेगी।

Eight Monthly Lecture by Dr Hemlata Bisht on Topic- **बौद्धिक सम्पदा अधिकार**

9th Monthly Lecture by Dr Indira Jugran on Topic- **संस्कृत दिवसः इतिहास एवं महत्व**

रीडिंग रूम के उद्घाटन में सम्मिलित शिक्षक एवं छात्र–छात्रायें।

कला और मानविकी परिषद की माह जुलाई–अगस्त की गतिविधियां

दिनांक **26.07.2022** को बौद्धिक सम्पदा अधिकार विषय में डॉ हेमलता बिष्ट, असि0प्रो0 वनस्पति विज्ञान ने अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि विश्व बौद्धिक सम्पदा संगठन ने सर्वप्रथम बौद्धिक सम्पदा अधिकार के प्रयास किए। भारत सहित इसमें 193 देश सदस्य हैं। इस अधिकार के माध्यम से सृजनकर्ता को पहचान प्राप्त होती है, साथ ही उसे इस माध्यम से अर्थ की प्राप्ति भी संभव हो पाई है। डॉ हेमलता ने बौद्धिक सम्पदा अधिकार के अन्तर्गत पेलारिज्म और रॉयल्टी की अवधारणा की भी चर्चा की। साथ ही बताया कि कॉपीराइट और पेटेंट में अंतर होता है। प्राचीनकाल से उपयोग में लाए जाने वाले हल्दी, नीम तथा तुलसी जैसी औषधीय गुणों वाली वनस्पति के पेटेंट सम्बन्धी विवाद के लिए भारत अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर संघर्षरत है।

04.08.2022 को रीडिंग रूम का उद्घाटन प्राचार्य प्रो0 रेनु नेगी द्वारा किया गया।

12.08.2022 संस्कृत दिवस में डॉ इन्दिरा जुगरान, एसो0प्रो0 ने विषय 'संस्कृत दिवस : इतिहास एवं महत्व' पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि भारत की तो प्रतिष्ठा है –संस्कृत और संस्कृति। संस्कृत दिवस हर वर्ष श्रावणी को मनाया जाता है। सन् 1969 को पहली बार इस दिन को व्यवहार में लाया गया।

श्रीलंका में आर्थिक संकट का एक विश्लेषण

डॉ0 हर्ष सिह
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र

एक देश का शक्तिशाली होने का आधार उसकी प्रति व्यक्ति आय एवं जी0डी0पी0 वृद्धिदर होती है। विश्व के देशों को प्रति व्यक्ति आय या आर्थिक सम्पन्न के आधार पर विकसित, विकासशील एवं अल्प विकसित श्रेणी में बांटा जाता है। विकसित देशों जैसे फ्रांस, अमेरीका,

जापान आदि की प्रति व्यक्ति आय बहुत अधिक है, जबकि विकासशील देशों जैसे भारत, चीन, बांग्लादेश, ब्राजील आदि प्रति व्यक्ति आय विकसित देशों की अपेक्षा कम है। विश्व में आर्थिक रूप से पिछड़े देश उच्च आर्थिक विकास दर को प्राप्त करने के लिए संघर्षरत है, ताकि विभिन्न आर्थिक समस्याओं जैसे भुखमरी, बेरोजगारी, आर्थिक असमानता आदि से निजात मिल सके। इन देशों के सामने सबसे बढ़ी चुनौती पर्यावरण संरक्षण के साथ उच्च आर्थिक विकास दर प्राप्त हासिल करना है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि पिछले 100 वर्षो में अनेक आर्थिक संकट पैदा हुए। 1929 की विश्वव्यापी मंदी हो, 2008 का वित्तीय संकट अथवा 2019 में कोविड–19 के कारण उत्पन्न आर्थिक संकट इन सभी आर्थिक एवं गैर आर्थिक घटनाओं ने विश्व अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया। कोविड–19 ये प्रभावित विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थायें जहां एक ओर इस आर्थिक संकट से उभरने की ओर अग्रसर है, वही दूसरी और हमारा पड़ोसी देश एक बड़े राजीतिक एवं आर्थिक संकट के दलदल में फसा हुआ है। श्रीलंका की आबादी 2.19 करोड़ एवं प्रति व्यक्ति आय 3682.04 अमेरिकी डॉलर है। 2020–21 में श्रीलंका की अर्थ व्यवस्था में सेवा क्षेत्र का 58.2 प्रतिशत, औद्योगिक क्षेत्र का 27.4 प्रतिशत एवं कृषि क्षेत्र का 7.4 प्रतिशत योगदान था। कोविड–19 के बाद बन्द पड़ी आर्थिक गतिविधियों एवं गलत आर्थिक नीतियों जैसे कर की दरों में कटौती परिणामस्वरूप राजस्व में भारी कमी एवं राजकोषीय घाटे में वृद्धि, आयतों में वृद्धि के परिणामस्वरूप विदेशी विनियमय की कमी, और्गनिक खेती को बढ़ावा देने के फलस्वरूप खाद्यानों की भारी कमी तथा मांग एवं आपूर्ति में असन्तुलन के कारण उत्पन्न मुद्रास्फीति ने वहां की अर्थ व्यवस्था को आर्थिक संकट के जाल में धकेल दिया। इस आर्थिक संकट से उभरने के लिए श्रीलंका को एक बढ़े आर्थिक पैकेज की आवश्यकता है, लेकिन इस आर्थिक संकट से उभरने के लिए श्रीलंका को सर्वप्रथम राजनैतिक स्थिरता को बहाल करना होगा।

YouTube Creators: From Gig Economy To Employment.

Vaibhav Singh Rawat
Assistant Professor, Economics

Circa 2005,

"Alright, so here we are in front of the, uh, elephants, and the cool thing about these guys is that, is that they have really, really, really long, um, trunks, and that's, that's cool, and that's pretty much all there is to say".

Aforementioned is the transcript of the first video uploaded on the YouTube titled, *"Me at the zoo"*, by its co-founder Jawad Karim. A website made for video sharing has become such a financial behemoth since it's acquisition by Google in 2006. Though no one can question it's contribution in the lexicon of cultural zeitgeist but what's surprising is the strides it has made in being a legitimate player for employment generation in the world economy.

This can be particularly deduced from the recent Oxford Economics study titled, *"A Platform for Indian Opportunity: Assessing the Economic, Societal and Cultural Impact of YouTube in* India". The study utilized 3 anonymized surveys with respondents comprising of 4032 of India based users,1203 creators and 1020 business. The data collected then captured the impact of YouTube ecosystem in particular it's contribution to employment and GDP of India.

Alongside it gives a new nomenclature of *"creative entrepreneurs"* to the creators that meet at least one of the following criteria, i) Earn income directly from YouTube and/or wider income helped by their YouTube presence, ii) Permanently hire paid employees to work on their channel, iii) Have more than 10,000 subscribers to their largest channel.

The study showed that the YouTube creative ecosystem contributed INR 6,800 Cr to the Indian economy in 2020 and supported 6,83,900 fulltime equivalent jobs.

The YouTube creative ecosystem's total economic impact can further be subdivided into **direct**, **indirect**, **induced**, and **catalytic impacts**.

Wherein **direct economic impact** of the YouTube's ecosystem in India refers to the profits and earnings of the creators which nothing but the revenue the platform redistributes to its creators, which can include ad sales, payouts from eight alternative monetization features such as channel memberships and Super Chat, and royalty payments paid to music and media companies.

The **indirect economic** impact of the YouTube's ecosystem in India entails the money spent on goods and services by the creators for producing new content for YouTube which creates a supply chain of its own.

When creators and other employees of YouTube's creative ecosystem, or its supply chain (including video editors, graphic designers, producers etc.), go on to spend their earnings. This activity creates a further **induced economic impact** in the economy.

In addition, the revenues that YouTube creators earn from other sources that are stimulated by their YouTube presence. This includes increased product sales, brand partnerships, or live performance engagements. Like Ganesh Gopal Pie whose YouTube channel Don't Memorise has more than 23 lakhs subscribers, the visibility he got from YouTube helped him license his content to various EdTech companies (Vedantu, Oxford University Press etc.) in India, while ad revenue and the YouTube Learning Fund helped him create even more content for his students, his presence on YouTube also helped him sell affordable micro-courses through DontMemorise.com. These "off-platform" revenues create a **catalytic impact** on the economy, stimulating additional indirect and induced impacts through supply chain activity and wage expenditure.

Thus the growing YouTube community is generating a huge amount of economic value in India, not just for creators but also for businesses, employees, and consumers across the country.

पर्यावरण प्रभाव आंकलन

विकास बहुगुणा

एम0ए0 II सेमेस्टर

देश में विकास करने के लिए भारत सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में कई नई याजनाओं की शुरूआत की, जिसके कारण पर्यावरण अधिक मात्रा में प्रदूषित होने लगा। पर्यावरण की होने वाली हानियों को देखते हुए सरकार तथा आम जनता विकास की परियोजनाओं के प्रभाव को लेकर चिंता जताने लगी। विकास परियोजनाओं के कारण पर्यावरण की होने वाली हानियों का आंकलन करने के लिए पर्यावरण प्रभाव आंकलन (EIA) का गठन किया गया।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण (UNEP) के अनुसार 'पर्यावरण प्रभाव आंकलन' को निर्णय लेने से पूर्व किसी परियोजना के पर्यावरणीय सामाजिक और आर्थिक प्रभावों की पहचाान करने हेतु उपयोग किए जाने वाले उपकरण के रूप में परिभाषित किया जाता है।

पर्यावरण प्रभाव आंकलन को प्रमुख रूप से एक महत्वपूर्ण विनिमय कहा जाता है, जिसके माध्यम से पर्यावरण पर विभिन्न परियोजनाओं, भूमि उपयोग, वन संरक्षण और जल प्रदूषण आदि के प्रभावों का पूर्ण रूप से अध्ययन किया जाता है। जो कि विकास परियोजनाओं पर निर्णय लेने में एक विकल्प के तौर पर कार्य करता है। वहीं पर्यावरण प्रभाव आंकलन अब 30 वर्गों में परियोजनाओं के लिए आवश्यक कर दिया गया है।

इन्हें पर्यावरणीय मंजूरी तभी प्रदान की जाती है जब वे EIA के शर्तों को पूरा करते हैं। इन्हें यह मंजूरी पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रदान की जाती है। भारत सरकार द्वारा मंजूरी प्राप्त करने वाली प्रमुख परियोजनाओं में उद्योग, खनन, थर्मल पावर प्लांट, नदी घाटी परियोजना (हाइड्रो पावर प्लांट) न्यूक्लियर पावर परियोजनाएं आदि आती हैं।

पर्यावरण प्रभाव आंकलन का लक्ष्य परियोजना नियोजन और डिजाइन के प्रारंभिक चरण में पर्यावरणीय प्रभावों की भविष्यवाणी करना, प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के तरीके और साधन खोजना, परियोजनाओं को स्थानीय पर्यावरण के अनुरूप आकार देना और निर्णय निर्माताओं के लिए विकल्प प्रस्तुत करना है।

भारत में पर्यावरण प्रभाव आंकलन की आवश्यकता सर्वप्रथ 1976–77 में तब महसूस की गई, जब योजना आयोग (वर्तमान नीती आयोग) ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की नदी घाटी परियोजनाओं की पर्यावरणीय दृष्टि से जांच करने को कहा। पहली पर्यावरणी प्रभाव आंकलन अधिसूचना वर्ष 1994 में तत्कालीन पर्यावरण एवं वन मंत्रालय (वर्तमान पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय) द्वारा स्थापित की गई थी। इस अधिसूचना के माध्यम से किसी भी निर्माण गतिविधि के विस्तार या आधुनिकीकरण या अधिसूचना की अनुसूची 1 में सूचीबद्ध की नई परियोजना की स्थापना के लिए पर्यावरण मंजूरी को अनिवार्य बना दिया गया।

वर्ष 2006 में इन कानूनों में कुछ सुधार किए गए, जिसके पश्चात पर्यावरण प्रभाव आंकलन के बाद ही किसी परियोजना के निर्माण को हरी झंडी देने की व्यवस्था की गई, जो आज तक लागू है। वर्तमान प्रक्रिया के अनुसार नया प्रोजेक्ट लगाने या किसी परियोजना के विस्तार हेतु पहले पर्यावारण स्वीकृति लेनी आवश्यक है। परन्तु वर्ष 2020 में लाए गए पर्यावरण प्रभाव आंकलन मसौदा (2020) की कमियों की ओर इंगित करते हुए पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य करने वाले कुछ गैर सरकारी संगठनों और पर्यावरणविदों ने यह आरोप लगाया है कि सरकार के द्वारा लाया गया

यह मसौदा पर्यावरण प्रभाव आंकलन के मूल प्रावधानों को कमजोर करता है, जो पर्यावरण को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। क्योंकि EIA अधिसूचना 2020 ऐसी परियोजनाओं के प्रवेश को भी सक्षम बनाती है जिनको कभी क्लीयरेंस मिला ही नहीं और उनके द्वारा लापरवाह तरीके से निर्माण कार्य भी किए गए हैं। इसके अतिरिक्त उल्लंघनों के लिए जुर्माना बहुत ही मामूली कर दिया गया है।

फ्राईडे फॉर फ्यूचर इंडिया (FFF) भारत में पर्यावरण संरक्षण हेतु एक जन आंदोलन (अथवा संस्था) है। इस संस्था ने हाल ही में भारत सरकार द्वारा जारी नए EIA 2020 मसौदे को लेकर अपनी चिंताएं जाहिर की है, इसके लिए इस संस्था ने कई पर्यावरण आंदोलन भी किए हैं। कोविड–19 महामारी के दौरान भारत सरकार ने पर्यावरण प्रभाव आंकलन 2020 के मसौदे को सार्वजनिक किया है ताकि जनता की राय इस पर जानी जा सके और उनके सुझावों को पर्यावरणविदों के द्वारा रेखांकित की गई चिंताओं पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

Tally: A Gateway To The Accounting Principles.

Shivanshi Uniyal, B.A. IInd Year

Every business organization in order to determine its annual financial report, needs certain accounting principles to ascertain net and gross profits during the year. Without these principles no organization can run its functions effectively. Accounting principles are the language of business. It records business transactions with a view to prepare final statements, hence helping owners and creditors in making economic decisions.

The main functions of accounting are, keeping systematic records of financial transactions, protecting properties of the business communicating results of the statements to the interested parties like, proprietors, investors, creditors, employees, government officials etc. The process of accounting is followed by first recording financial transactions into the journal, then from the journal entries a particular and individual accounts are opened in the ledger books, then trial balances are made and finally trading and, profit and loss accounts are made with the balance sheet of the year. This whole accounting process is known as accounting cycle, which is repeated in each subsequent year. The principles of accounting are classified into two categories, accounting concepts and accounting conventions.

Accounting concepts are related to business entity money measurement cost and time, whereas accounting conventions are related to financial statements disclosure and conservation of financial statements. To have a basic knowledge of general accounting "Tally" is helpful. Tally is the most powerful integrated accounting. It is the practical way of performing and making various accounting books of a business entity. Tally is usually done either on Windows or DOS prompt, after its installation the tally screen has three areas, the actual work area (consisting menus, masters and reports),the direct command area (to give commands) and, the keys (to perform functions).

For the gateway of tally to work, first a company is selected and then various functions are performed such as, creating accounts, entering vouchers, viewing and printing reports under primary choices such as, accounts information, inventory, voucher entry, balance sheet, stock statement and display. Under accounts information various accounts groups are made then ledgers are made, the cost categories are determined. Under inventory information, entry is done with viewing reports.

Nowadays, many organizations have adopted simple Tally software to deal with their accounts. It is simple and easy to use, operates with speed, non time-consuming and cost-effective, and it is widely used for monetary control, invoicing, reporting and sales management.

Word of the Month

laissez-faire, (French: "allow to do") policy of minimum governmental interference in the economic affairs of individuals and society. The origin of the term is uncertain, but folklore suggests that it is derived from the answer Jean-Baptiste Colbert, comptroller general of finance under King Louis XIV of France, received when he asked industrialists what the government could do to help business: "Leave us alone." The doctrine of laissez-faire is usually associated with the economists known as Physiocrats, who flourished in France from about 1756 to 1778. The policy of laissez-faire received strong support in classical economics as it developed in Great Britain under the influence of the philosopher and economist Adam Smith

यह न्यूज लेटर पूरी तरह अव्यवसायिक है तथा इसका प्रकाशन मानविकी एवं समाज विज्ञान परिषद के सदस्यों द्वारा छात्र हित में किया गया है।